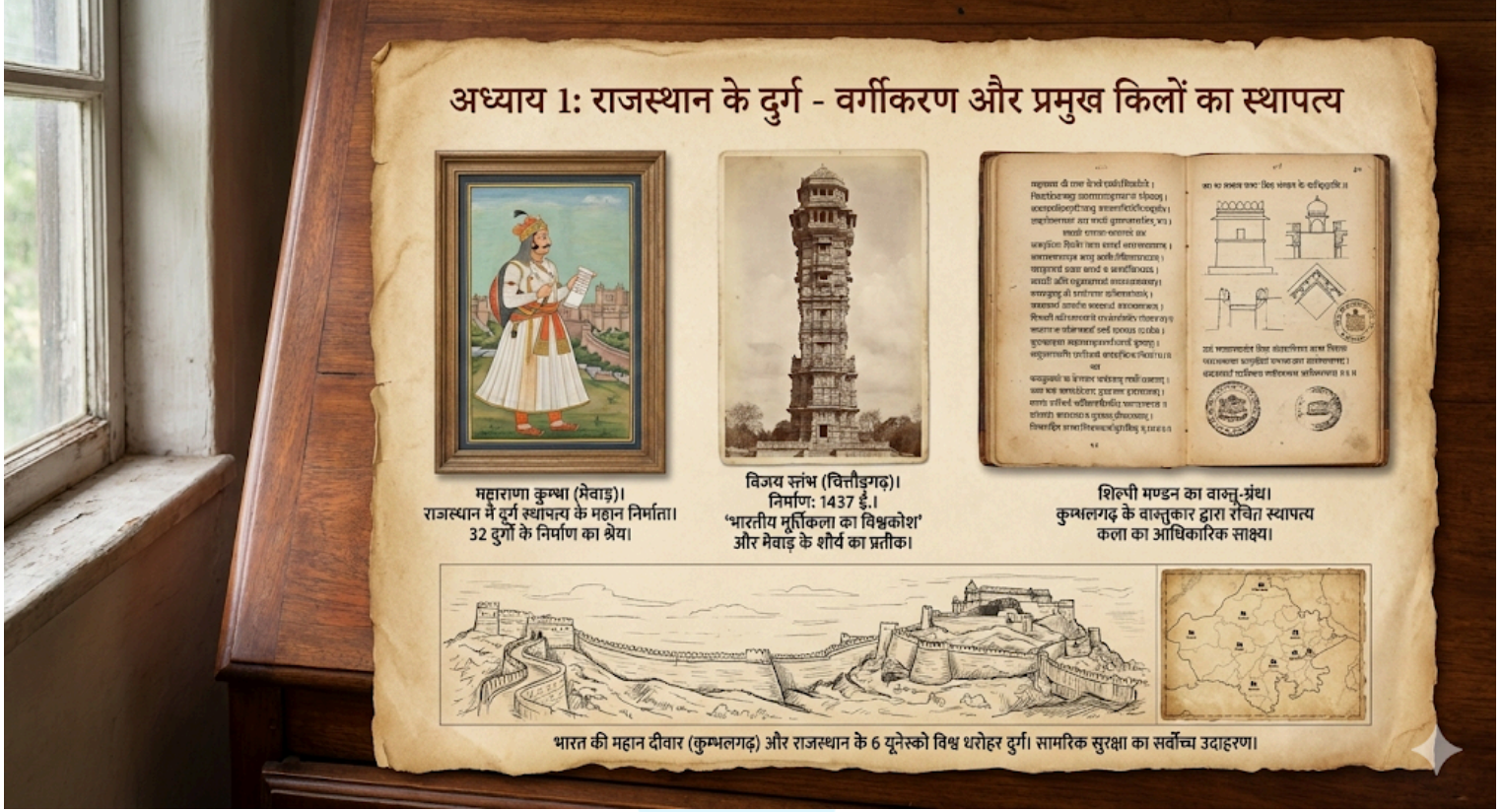


टेस्ट 03 - राजस्थान कला एवं संस्कृति (भाग-1)

स्थापत्य कला (मंदिर, किले, महल और जल संरचनाएं)



अध्याय 1: राजस्थान के दुर्ग: वर्गीकरण और प्रमुख किलों का स्थापत्य (भाग-A)

यह सामग्री डॉ. गोपीनाथ शर्मा, डॉ. जयसिंह नीरज और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के 'राजस्थान के दुर्ग' नामक प्रामाणिक ग्रंथों के आधार पर तैयार की गई है।

1. दुर्ग स्थापत्य: ऐतिहासिक एवं सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

राजस्थान को 'दुर्गों की भूमि' कहा जाता है। यहाँ के दुर्ग न केवल सामरिक सुरक्षा के केंद्र थे, बल्कि वे तत्कालीन कला, संस्कृति और स्थापत्य के सर्वोत्तम प्रतिमान भी थे।

- **कौटिल्य का वर्गीकरण:** कौटिल्य (चाणक्य) ने 'अर्थशास्त्र' में दुर्गों की चार श्रेणियों का उल्लेख किया है— औदक (जल), पार्वत (पर्वत), धान्वन (मरुस्थल) और वन दुर्ग।
- **शुक्रनीति का वर्गीकरण:** राजस्थान के दुर्गों के संदर्भ में 'शुक्रनीति' का वर्गीकरण सर्वाधिक मान्य है, जिसमें दुर्गों की 9 श्रेणियाँ बताई गई हैं:
 1. **एरण दुर्ग:** वह दुर्ग जिसका मार्ग पत्थर, कांटों और गड्ढों से दुर्गम हो (जैसे- रणथंभौर)।
 2. **पारिख दुर्ग:** जिसके चारों ओर गहरी खाई हो (जैसे- लोहागढ़, भरतपुर)।
 3. **पारिघ दुर्ग:** जिसके चारों ओर ईंट, पत्थर और मिट्टी का विशाल परकोटा हो (जैसे- चित्तौड़गढ़)।
 4. **वन दुर्ग:** जो चारों ओर से सघन वन से घिरा हो (जैसे- सिवाना)।
 5. **धान्वन दुर्ग:** जो मरुस्थल के बीच स्थित हो (जैसे- सोनारगढ़, जैसलमेर)।
 6. **जल दुर्ग (औदक):** जो जल राशि से घिरा हो (जैसे- गागरोन)।
 7. **गिरि दुर्ग:** जो किसी ऊँची पहाड़ी पर स्थित हो (जैसे- मेहरानगढ़, कुम्भलगढ़)।
 8. **सैन्य दुर्ग:** जहाँ व्यूह रचना में चतुर सैनिक रहते हों।

9. **सहाय दुर्ग:** जहाँ सदा साथ देने वाले बंधु-बंधव रहते हों।

2. यूनेस्को विश्व धरोहर सूची (UNESCO World Heritage Sites)

जून 2013 में कंबोडिया (नामपेन्ह) में आयोजित सम्मेलन में राजस्थान के **6 किलों** को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया:

1. चित्तौड़गढ़ दुर्ग
2. कुम्भलगढ़ दुर्ग (राजसमंद)
3. रणथंभौर दुर्ग (सवाई माधोपुर)
4. गागरोन दुर्ग (झालावाड़)
5. आमेर दुर्ग (जयपुर)
6. जैसलमेर दुर्ग (सोनारगढ़)

3. चित्तौड़गढ़ दुर्ग: 'दुर्गों का सिरमौर'

"गढ़ तो चित्तौड़गढ़, बाकी सब गढ़ैया"— यह कहावत इस दुर्ग की महत्ता को प्रतिपादित करती है।

- **भौगोलिक स्थिति:** यह दुर्ग मेसा के पठार (616 मीटर ऊँचा) पर गम्भीरी और बेड़च नदियों के संगम पर स्थित है।
- **निर्माण:** इसका निर्माण चित्रंगद मौर्य ने करवाया था। यह राजस्थान का सबसे बड़ा 'लिविंग फोर्ट' (आवासीय दुर्ग) है।
- **स्थापत्य विशेषता:**
 - **विजय स्तंभ:** महाराणा कुम्भा ने मालवा विजय (1437) की स्मृति में बनवाया। यह 122 फीट ऊँचा और 9 मंजिला है। इसे 'भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश' और 'विष्णु ध्वज' कहा जाता है।
 - **कीर्ति स्तंभ:** यह 7 मंजिला जैन स्तंभ है, जो प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित है।
 - **सात प्रवेश द्वार:** पाडन पोल, भैरव पोल, हनुमान पोल, गणेश पोल, जोड़ला पोल, लक्ष्मण पोल और राम पोल।
- **साके (Saka):** चित्तौड़गढ़ अपने तीन प्रसिद्ध साकों (1303, 1534, 1567-68) के लिए जाना जाता है।

4. कुम्भलगढ़ दुर्ग (राजसमंद): 'मेवाड़ की संकटकालीन राजधानी'

महाराणा कुम्भा ने अपने प्रसिद्ध शिल्पी **मण्डन** की देखरेख में इसका निर्माण करवाया।

- **परकोटा:** इस दुर्ग का परकोटा **36 किमी लम्बा** है, जिसे 'भारत की महान दीवार' (Great Wall of India) कहा जाता है। इसकी चौड़ाई इतनी है कि 4 घोड़सवार एक साथ चल सकते हैं।
- **कटारगढ़:** यह दुर्ग के भीतर सबसे ऊँचे भाग पर स्थित महल है, जिसे 'मेवाड़ की आँख' कहा जाता है। यहीं महाराणा प्रताप का जन्म (बादल महल) हुआ था।
- **कथन:** अबुल फजल ने इसके बारे में लिखा है— "यह दुर्ग इतनी बुलंदी पर स्थित है कि नीचे से ऊपर देखने पर सिर की पगड़ी गिर जाती है।"

5. रणथंभौर दुर्ग (सवाई माधोपुर): 'बख्तरबंद दुर्ग'

यह दुर्ग अरावली की सात पहाड़ियों से घिरा हुआ है।

- **स्थापत्य की विलक्षणता:** अबुल फजल ने इसे 'बख्तरबंद' दुर्ग कहा है क्योंकि यह दूर से दिखाई नहीं देता।
- **प्रमुख संरचनाएं:**
 - **त्रिनेत्र गणेश मंदिर:** प्रसिद्ध तीर्थ स्थल।
 - **जौरा-भौरा:** यहाँ के प्रसिद्ध अन्न भंडार।
 - **32 खंभों की छतरी:** हम्मीर देव चौहान ने अपने पिता की स्मृति में बनवाई, इसे 'न्याय की छतरी' भी कहते हैं।
 - **पीर सदरुद्दीन की दरगाह:** सांप्रदायिक सद्भाव का केंद्र।

6. विश्लेषण: दुर्गों का सांस्कृतिक एवं सामरिक महत्व

राजस्थान के दुर्ग केवल युद्ध की चौकियाँ नहीं थे। चित्तौड़गढ़ जैसा दुर्ग अपनी कृषि योग्य भूमि के कारण आत्मनिर्भरता का प्रतीक था, जो घेराबंदी के समय रसद आपूर्ति सुनिश्चित करता था। स्थापत्य कला के दृष्टिकोण से, मण्डन द्वारा कुम्भलगढ़ में अपनाए गए वास्तु-सिद्धांत (वास्तुसार) आज भी शोध का विषय हैं। इन दुर्गों का निर्माण प्राकृतिक संसाधनों (पहाड़, नदियों) को ढाल बनाकर किया गया, जो 'इको-फ्रेंडली' स्थापत्य का प्राचीन उदाहरण है।

7. महत्वपूर्ण तथ्य(Important Notes)

- **तथ्य:** गागरोन का किला बिना किसी नींव के एक विशाल चट्टान पर खड़ा है, जो जल दुर्ग का सर्वोत्तम उदाहरण है।
- **नोट:** बीकानेर के जूनागढ़ दुर्ग के बारे में कहा जाता है कि— *"दीवारों के भी कान होते हैं, पर जूनागढ़ की दीवारें तो बोलती हैं!"*
- **शब्दावली:** 'पासीब' (दुर्ग के बाहर बनाया गया ऊँचा चबूतरा) और 'मगरबी' (पत्थर फेंकने वाला यंत्र) जैसे शब्दों का प्रयोग दुर्ग युद्ध कला में होता था।

8. प्रमुख दुर्गों का तुलनात्मक विवरण (तालिका)

दुर्ग	श्रेणी	प्रमुख स्मारक	निर्माता
चित्तौड़गढ़	गिरि / पारिघ	विजय स्तंभ, पद्मिनी महल	चित्रंगद मौर्य
कुम्भलगढ़	गिरि	कटारगढ़, नीलकंठ महादेव	महाराणा कुम्भा
रणथंभौर	एरण / वन	हम्मीर महल, न्याय की छतरी	रंतिदेव / चौहान
जैसलमेर	धान्वन	रंग महल, हस्तलिखित भंडार	जैसल भाटी
लोहागढ़	पारिख	किशोरी महल, जवाहर लाट	सूरजमल जाट

wincompete

[अध्याय 2: राजस्थान के दुर्ग: मेहरानगढ़, जूनागढ़, सोनारगढ़ एवं लोहागढ़]



[राव जोधा],
[जोधपुर के संस्थापक], [1459 ई.]।
[मेहरानगढ़ दुर्ग के निर्माता।]



[सोनारगढ़ (जैसलमेर)], [1155 ई.]।
[‘स्वर्ण दुर्ग’ की स्थापत्य कला और 99 बुर्ज।]



[बीकानेर रियासत का ऐतिहासिक फरमान]।
[जूनागढ़ दुर्ग से संबंधित अभिलेख।]



[लोहागढ़ (भरतपुर) का नक्शा]।
[‘अजेय दुर्ग’ और सुजान गंगा नहर का जल प्रबंधन।]

अध्याय 2: राजस्थान के दुर्ग: मेहरानगढ़, जूनागढ़, सोनारगढ़ एवं लोहागढ़

यह सामग्री डॉ. जयसिंह नीरज और डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर की आधिकारिक कृतियों तथा RPSC के अद्यतन परीक्षा पैटर्न के आधार पर तैयार की गई है।

1. मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर): 'मयूरध्वजगढ़'

चिड़ियाटूक पहाड़ी पर स्थित यह दुर्ग अपनी विशालता और भव्यता के कारण 'लॉड्स ऑफ मारवाड़' का प्रतीक है।

- **निर्माण एवं नींव:** इसका निर्माण **राव जोधा** ने 12 मई, 1459 को करवाया। लोक मान्यताओं के अनुसार इसकी नींव में **राजाराम मेघवाल** को जीवित चुना गया था।
- **स्थापत्य विशेषताएँ:**
 - **प्रवेश द्वार:** जय पोल, लोहा पोल और फतेह पोल। लोहा पोल पर आज भी रानियों के 'सती हथेलियों' के निशान अंकित हैं।
 - **महल:** **फूल महल** (अभय सिंह द्वारा निर्मित, सोने की नक्काशी हेतु प्रसिद्ध), **मोती महल**, और **शृंगार चौकी** (जहाँ जोधपुर के राजाओं का राजतिलक होता था)।
 - **तोपें:** यहाँ की प्रसिद्ध तोपों में **किलकिला**, **शंभुबाण**, **गजनी खाँ**, और **जमजमा** शामिल हैं।
- **जल संचयन:** दुर्ग के भीतर **रानीसर** और **पद्मसर** तालाब जल आपूर्ति के मुख्य स्रोत रहे हैं।

2. सोनारगढ़ (जैसलमेर): 'स्वर्ण दुर्ग'

त्रिकूट पहाड़ी पर स्थित यह दुर्ग बिना किसी चूने या सीमेंट के केवल पत्थरों को आपस में जोड़कर (Interlocking system) बनाया गया है।

- **निर्माण:** 1155 ई. में **जैसल भाटी** द्वारा।
- **विशिष्ट स्थापत्य:**
 - **बुर्ज:** इस दुर्ग में सर्वाधिक **99 बुर्ज** हैं, जो इसकी सामरिक मजबूती का आधार हैं।
 - **छत:** इसकी छत लकड़ी की बनी हुई है, जिसे दीमक से बचाने के लिए गोमूत्र और लेप का प्रयोग किया गया है।
 - **अक्षय प्रोल:** दुर्ग का मुख्य प्रवेश द्वार।
- **ज्ञान भंडार:** यहाँ '**जैन भद्र सूरी ग्रंथ भंडार**' स्थित है, जो ताड़ के पत्तों पर लिखे दुर्लभ हस्तलिखित ग्रंथों का सबसे बड़ा संग्रह है।
- **ढाई साके:** यह दुर्ग अपने 'ढाई साकों' के लिए इतिहास में प्रसिद्ध है।

3. जूनागढ़ दुर्ग (बीकानेर): 'जमीन का जेवर'

यह धान्वन श्रेणी का दुर्ग है, जिसे महाराजा रायसिंह ने अपने शिल्पी करमचंद की देखरेख में बनवाया था।

- **स्थापत्य शैली:** इसमें राजपूत और मुगल स्थापत्य शैली का अद्भुत समन्वय मिलता है।
- **प्रमुख स्मारक:**
 - **सूरज प्रोल:** मुख्य द्वार, जिसके दोनों ओर **जयमल और फत्ता** की गजारूढ़ (हाथी पर सवार) मूर्तियाँ लगी हैं।
 - **अनूप महल:** यहाँ बीकानेर के शासकों का राजतिलक होता था। यहाँ की सोने की कलम का काम अद्वितीय है।
 - **गंगा निवास:** इसमें महाराजा गंगा सिंह का निजी कक्ष और उनके द्वारा उपयोग किया गया प्रथम विश्व युद्ध का हवाई जहाज रखा है।
- **विशेषता:** राजस्थान का पहला दुर्ग जिसमें **लिफ्ट** का प्रयोग किया गया।

4. लोहागढ़ दुर्ग (भरतपुर): 'अजेय दुर्ग'

मिट्टी के परकोटों से निर्मित यह किला पारिख दुर्ग श्रेणी का सर्वोत्तम उदाहरण है।

- **निर्माण:** 1733 ई. में महाराजा **सूरजमल जाट** द्वारा।
- **सामरिक महत्व:** * इसके चारों ओर एक गहरी खाई है, जिसमें **सुजान गंगा नहर** के माध्यम से मोती झील का पानी भरा जाता था।
 - मिट्टी की दोहरी प्राचीर होने के कारण तोप के गोले मिट्टी में धँस जाते थे और किले को कोई नुकसान नहीं पहुँचता था।
 - अंग्रेज सेनापति **लॉर्ड लेक** ने 1805 में पांच बार आक्रमण किया लेकिन वह असफल रहा।
- **जवाहर लाट:** दिल्ली विजय की स्मृति में निर्मित विजय स्तंभ।
- **अष्टधातु दरवाजा:** महाराजा जवाहर सिंह इसे दिल्ली के लाल किले से उतारकर लाए थे।

5. दुर्गों में जल संचयन की उन्नत प्रणालियाँ

राजस्थान के दुर्ग स्थापत्य में जल प्रबंधन सबसे महत्वपूर्ण अभियांत्रिकी (Engineering) कार्य था।

1. **टांका (Tankas):** मेहरानगढ़ और जयगढ़ जैसे किलों में विशाल भूमिगत टांके बनाए गए थे, जिनमें वर्षा जल को एकत्रित किया जाता था।
2. **बावड़ियाँ:** चित्तौड़गढ़ और बूंदी के किलों में स्थापत्य कला से युक्त गहरी बावड़ियाँ जल संचयन और तापमान नियंत्रण दोनों का कार्य करती थीं।
3. **लिफ्ट प्रणाली:** कुम्भलगढ़ में ऊँचे भागों तक जल पहुँचाने के लिए रहट पद्धति का उपयोग किया जाता था।

6. विश्लेषण: दुर्गों के बुर्ज और परकोटों का सामरिक विज्ञान

दुर्गों में बुर्जों (Bastions) की संख्या और उनकी गोलाई केवल सौंदर्य के लिए नहीं थी। जैसलमेर के 99 बुर्ज 'कोणीय आक्रमण' (Angular Attack) को विफल करने के लिए बनाए गए थे। बुर्जों पर 'कंगूरे' और 'तिरछी झरोखियाँ' इसलिए बनाई जाती थीं ताकि सैनिक सुरक्षित रहकर नीचे की सेना पर गर्म तेल या पत्थर बरसा सकें। लोहागढ़ का 'मिट्टी का आवरण' आधुनिक बैलिस्टिक सुरक्षा (Ballistic Protection) का प्राचीन भारतीय विकल्प था।

7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** मेहरानगढ़ दुर्ग की आकृति मयूर के समान है, इसीलिए इसे 'मयूरध्वजगढ़' कहा जाता है।
- **नोट:** जैसलमेर दुर्ग को दूर से देखने पर ऐसा आभास होता है जैसे रेगिस्तान के समंदर में कोई जहाज 'लंगर' डाले खड़ा हो।
- **विरोधाभास:** कुछ ग्रंथों में जूनागढ़ को 'गिरि दुर्ग' माना गया है, लेकिन धरातल पर स्थित होने के कारण यह विशुद्ध रूप से 'धान्वन' और 'भूमि दुर्ग' की श्रेणी में आता है।

8. दुर्ग स्थापत्य तुलनात्मक तालिका (अध्याय 2)

दुर्ग	मुख्य द्वार	विशिष्ट शैली/स्मारक	जल स्रोत
मेहरानगढ़	जय प्रोल	फूल महल, चामुंडा मंदिर	रानीसर तालाब
सोनारगढ़	अक्षय प्रोल	हस्तलिखित भंडार, बुर्ज	जेतू सागर
जूनागढ़	सूरज प्रोल	अनूप महल, बादलमहल	रामसर, रानीसर
लोहागढ़	लोहा प्रोल	अष्टधातु द्वार, जवाहर लाट	सुजान गंगा

wincompete

[अध्याय 3: राजस्थान के प्रमुख मंदिर: स्थापत्य शैलियाँ एवं ऐतिहासिक मंदिर समूह]



[वत्सराज प्रतिहार],
[गुर्जर-प्रतिहार शासक], [8वीं-9वीं शताब्दी]।
[महा-मारू शैली के मंदिरों के संरक्षक]।



[सोमेश्वर मंदिर (किराड़)],
[11वीं-12वीं शताब्दी]।
[राजस्थान का खजुराहो - मारू-गुर्जर शैली]।



[ओसियाँ का अभिलेख].
[महा-मारू शैली के विकास का साक्ष्य]।



[राजस्थान के प्रमुख मंदिर समूह का नक्शा].
[ऐतिहासिक स्थलों का भौगोलिक वितरण]।

अध्याय 3: राजस्थान के प्रमुख मंदिर: स्थापत्य शैलियाँ एवं ऐतिहासिक मंदिर समूह

यह सामग्री डॉ. गोपीनाथ शर्मा, डॉ. जयसिंह नीरज और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के 'राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा' ग्रंथ के साक्ष्यों पर आधारित है।

1. मंदिर स्थापत्य की प्रमुख शैलियाँ

राजस्थान में मंदिरों का निर्माण मुख्य रूप से **नागर शैली** में हुआ है, जिसके अंतर्गत कई उप-शैलियों का विकास हुआ।

- **नागर शैली (Nagara Style):** यह उत्तर भारत की प्रमुख शैली है। इसकी मुख्य विशेषताएँ ऊँचा चबूतरा (जगती), गर्भगृह, शिखर और मण्डप हैं।
- **महा-मारू शैली (Maha-Maru Style):** 8वीं से 10वीं शताब्दी के मध्य **गुर्जर-प्रतिहार** शासकों द्वारा विकसित। इसमें अलंकरण की प्रधानता और ऊँची पीठिका होती है (जैसे- ओसियाँ के मंदिर)।
- **मारू-गुर्जर शैली (Maru-Gurjara Style):** 11वीं से 13वीं शताब्दी में **सोलंकी (चालुक्य)** शासकों के काल में विकसित। यह शैली बारीक नक्काशी और सफेद संगमरमर के प्रयोग के लिए प्रसिद्ध है (जैसे- देलवाड़ा)।
- **भूमिज शैली (Bhumija Style):** यह नागर शैली की ही एक उप-शैली है, जिसमें शिखर पर छोटी-छोटी शिखरों की पंक्तियाँ होती हैं (जैसे- उण्डेश्वर मंदिर, बिजोलिया और सेवाड़ी का जैन मंदिर)।
- **पंचायतन शैली:** जब मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर चार लघु मंदिर स्थित हों (जैसे- बाड़ोली के मंदिर और हरिहर मंदिर, ओसियाँ)।

2. किराड़ मंदिर समूह (बाड़मेर): 'राजस्थान का खजुराहो'

हाथमा गाँव (बाड़मेर) में स्थित ये मंदिर 11वीं-12वीं शताब्दी की **मारू-गुर्जर (सोलंकी)** शैली के सर्वोत्तम उदाहरण हैं।

- **सोमेश्वर मंदिर:** यह किराड़ का सबसे भव्य और अंतिम मंदिर है। इसके शिखर और स्तंभों पर की गई नक्काशी खजुराहो के मंदिरों से मेल खाती है।
- **विशेषता:** यहाँ के मंदिरों की मूर्तियों में मानव आकृतियों के कामुक और सजीव चित्रण के कारण इसे 'राजस्थान का खजुराहो' कहा जाता है।

- **स्थापत्य:** यह मंदिर नागर शैली की उप-शैली 'मारू-गुर्जर' का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें ऊँची जगती और अलंकृत तोरण द्वार प्रमुख हैं।

3. देलवाड़ा के जैन मंदिर (माउंट आबू): 'पत्थरों पर खुदी कविता'

संगमरमर की बारीक नक्काशी के लिए प्रसिद्ध यह समूह विश्व के सुंदरतम मंदिरों में गिना जाता है। यहाँ मुख्य रूप से पाँच मंदिर हैं:

1. **विमल वसही मंदिर (1031 ई.):** गुजरात के चालुक्य राजा भीमदेव के मंत्री **विमल शाह** द्वारा निर्मित। यह प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) को समर्पित है।
2. **लूण वसही मंदिर (1230 ई.):** तेजपाल और वास्तुपाल भाइयों द्वारा निर्मित। यह 22वें तीर्थंकर **नेमिनाथ** को समर्पित है। इसमें देवरानी-जेठानी के आले प्रसिद्ध हैं।
3. **पित्तलहर मंदिर (भीमा शाह मंदिर):** इसमें भगवान ऋषभदेव की 108 मन भारी पीतल की मूर्ति है।
4. **खरतर वसही मंदिर:** इसे 'चौमुखा मंदिर' भी कहते हैं।
5. **महावीर स्वामी मंदिर:** 1582 ई. में निर्मित।

4. ओसियाँ के मंदिर (जोधपुर): 'राजस्थान का भुवनेश्वर'

प्रतिहार कालीन स्थापत्य का यह केंद्र 'महा-मारू' शैली के क्रमिक विकास को दर्शाता है।

- **सच्चिया माता मंदिर:** यह ओसियाँ का सबसे प्रसिद्ध मंदिर है, जिसमें प्रतिहार शैली की मौलिकता सुरक्षित है।
- **सूर्य मंदिर:** अपनी भव्यता के कारण इसे '**राजस्थान का कोणार्क**' भी कहा जाता है।
- **हरिहर मंदिर:** यह पंचायतन शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है।
- **जैन मंदिर:** महावीर स्वामी को समर्पित यह मंदिर पश्चिमी भारत के प्राचीनतम जैन मंदिरों में से एक है (वत्सराज प्रतिहार के काल में निर्मित)।

5. अन्य महत्वपूर्ण मंदिर समूह

- **रणकपुर के जैन मंदिर (पाली):** महाराणा कुम्भा के काल में **धरणक शाह** द्वारा निर्मित। इसमें **1444 खंभे** हैं, इसलिए इसे 'खंभों का अजायबघर' कहा जाता है। इसके शिल्पी **दीपाक** थे।
- **बाड़ोली के मंदिर (चित्तौड़गढ़):** हूण शासक **तोरमाण** के पुत्र मिहिरकुल द्वारा निर्मित। यह पंचायतन शैली के शिव मंदिर हैं।
- **जगदीश मंदिर (उदयपुर):** महाराणा जगतसिंह प्रथम द्वारा निर्मित। इसे '**सपनों में बना मंदिर**' कहा जाता है।

6. विश्लेषण: महा-मारू और मारू-गुर्जर शैली का संक्रमण

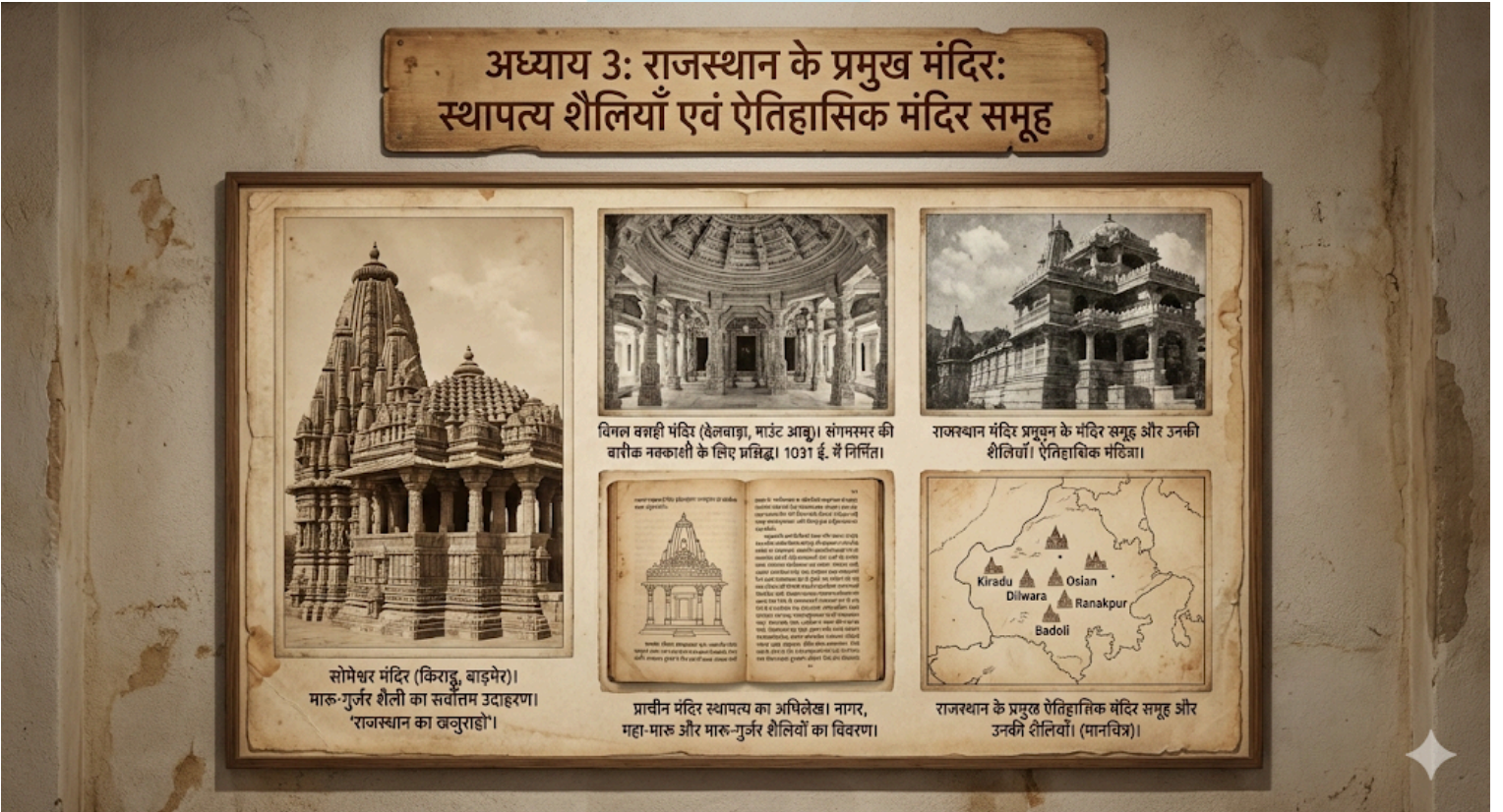
राजस्थान के मंदिर स्थापत्य में 10वीं शताब्दी एक विभाजक रेखा है। 10वीं शताब्दी से पूर्व 'महा-मारू' शैली में मूर्तियों की सुडौलता और सादगी पर बल था। इसके विपरीत, 11वीं शताब्दी के बाद 'मारू-गुर्जर' शैली (किराड़ और देलवाड़ा) में अलंकरण इतना सघन हो गया कि पत्थर गायब सा हो गया और केवल नक्काशी दिखाई देने लगी। देलवाड़ा के मंदिरों की छतें और किराड़ के स्तंभ इसी 'अति-अलंकरण' (Horror Vacui) की प्रवृत्ति के परिचायक हैं, जो राजस्थान को वैश्विक कला मानचित्र पर विशिष्ट स्थान दिलाते हैं।

7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** सास-बहू का मंदिर (नागदा) वास्तव में **सहस्रबाहु (विष्णु)** का मंदिर है, जो कालांतर में अपभ्रंश होकर सास-बहू कहलाने लगा।
- **नोट:** आभानेरी का **हर्षत माता मंदिर** मूलतः एक विष्णु मंदिर था, जो निकुंभ क्षत्रियों द्वारा प्रतिहार शैली में बनवाया गया था।
- **विरोधाभास:** कुछ पर्यटक गाइड किराड़ को 'राजस्थान का गया' कहते हैं, जो गलत है; आधिकारिक तौर पर यह 'राजस्थान का खजुराहो' है।

8. मंदिर स्थापत्य: त्वरित संदर्भ तालिका

मंदिर समूह	स्थान	प्रमुख शैली	विशेष तथ्य
किराडू	बाड़मेर	मारू-गुर्जर	सोमेश्वर मंदिर (सर्वोत्तम)।
देलवाड़ा	माउंट आबू	मारू-गुर्जर	संगमरमर की नक्काशी, शिल्पी सोभनदेव।
ओसियाँ	जोधपुर	महा-मारू (प्रतिहार)	सूर्य मंदिर, सच्चिया माता।
रणकपुर	पाली	नागर (मथाई नदी तट)	1444 खंभे, शिल्पी दीपाक।
बाड़ोली	चित्तौड़गढ़	पंचायतन	शिव मंदिर, हूण कालीन।



अध्याय 4: राजस्थान के प्रमुख महल एवं छतरियाँ



[सवाई प्रताप सिंह],
[जयपुर के कछवाहा शासक,
[1799 ई.]। [हवा महल के निर्माता
और कला संरक्षक।]



[हवा महल (जयपुर)], [1799 ई.]।
[राजपूत स्थापत्य का मुकुट - 953
झरोखी वाला पाँच मंजिला भवन।]



[उदयपुर सिटी पैलेस का शाही फरमान]।
[मेवाड़ के महाराजाओं के निवास और
'राजस्थान के विडसर' का आधार।]



[राजस्थान के प्रमुख महल एवं
छतरियाँ (मानचित्र)]।
[स्थापत्य के विविध केंद्रों का भौगोलिक
विवरण।]

अध्याय 4: राजस्थान के प्रमुख महल एवं छतरियाँ

यह सामग्री डॉ. गोपीनाथ शर्मा, हुकुम चंद जैन और 'राजस्थान के महल' (आधिकारिक प्रकाशन) के प्रामाणिक तथ्यों पर आधारित है।

1. राजस्थान के महल स्थापत्य की विशेषताएँ

राजस्थान के महलों में राजपूत शैली के साथ-साथ मुगल और बाद में यूरोपीय स्थापत्य का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इनकी प्रमुख विशेषताओं में झरोखे, गोलाकार गुंबद, स्तंभों पर आधारित बरामदे और भीति चित्रों की प्रधानता शामिल है।

2. हवा महल (जयपुर): 'राजपूत स्थापत्य का मुकुट'

जयपुर की पहचान बन चुका यह महल बिना किसी नींव के केवल अपनी वैज्ञानिक बनावट के कारण खड़ा है।

- निर्माण: 1799 ई. में सवाई प्रताप सिंह द्वारा।
- शिल्पी: लाल चंद उस्ता।
- स्थापत्य विवरण:
 - यह पाँच मंजिला भवन है, जिसकी आकृति भगवान कृष्ण के मुकुट के समान है।
 - मंजिलों के नाम: शरद मंदिर (प्रताप मंदिर), रतन मंदिर, विचित्र मंदिर, प्रकाश मंदिर और हवा मंदिर।
 - इसमें 953 झरोखे और 365 खिड़कियाँ हैं, जिन्हें रानियों द्वारा शहर के उत्सव देखने के लिए बनाया गया था।
- वैज्ञानिक पक्ष: इसमें 'वेंचुरी प्रभाव' का उपयोग किया गया है, जिससे गर्म हवा ठंडी होकर भीतर प्रवेश करती है।

3. सिटी पैलेस (जयपुर): 'चन्द्र महल'

यह महल जयपुर के केंद्र में स्थित है और कछवाहा शासकों का निवास स्थल रहा है।

- प्रमुख भाग:
 - चन्द्र महल: यह 7 मंजिला है, जिसकी हर मंजिल का नाम अलग है (जैसे- मुकुट महल, रंग महल)।
 - मुबारक महल: इसका निर्माण महाराजा माधोसिंह द्वितीय ने अतिथियों के स्वागत हेतु करवाया था। इसमें राजपूत, मुगल और यूरोपीय शैली का संगम है।

- **प्रीतम निवास चौक:** यहाँ चार ऋतुओं को समर्पित चार कलात्मक प्रवेश द्वार हैं (मोर द्वार- वर्षा, कमल द्वार- ग्रीष्म, गुलाब द्वार- शीत, और लहरिया द्वार- बसंत)।
- **विशेष आकर्षण:** यहाँ चांदी के दो विशाल पात्र (संसार के सबसे बड़े) रखे हुए हैं।

4. सिटी पैलेस (उदयपुर): 'राजस्थान का विंडसर'

पिछोला झील के तट पर स्थित यह महल अपनी भव्यता और धवल आभा के लिए प्रसिद्ध है।

- **ऐतिहासिक संदर्भ:** इसका निर्माण **महाराणा उदय सिंह** ने 1559 ई. में प्रारंभ करवाया था।
- **फर्ग्यूसन का कथन:** इतिहासकार फर्ग्यूसन ने इसकी तुलना इंग्लैंड के 'विंडसर महलों' से की है।
- **प्रमुख संरचनाएँ:**
 - **मोती महल, माणक महल और दिलखुश महल:** यहाँ की काँच की नक्काशी और भीति चित्र अद्वितीय हैं।
 - **मोर चौक:** यहाँ काँच की पच्चीकारी से बने तीन मोर विश्व प्रसिद्ध हैं।
- **जल स्थापत्य:** महल का प्रतिबिम्ब पिछोला झील में गिरता है, जो एक अलौकिक दृश्य प्रस्तुत करता है।

5. डीग के जल महल (भरतपुर): 'फव्वारों का स्वर्ग'

डीग (भरतपुर) अपने उद्यानों और जल महलों के लिए 'जल महलों की नगरी' कहलाता है।

- **निर्माण:** महाराजा **बदन सिंह** ने नींव रखी और महाराजा **सूरजमल** ने इसे भव्यता प्रदान की।
- **गोपाल भवन:** यह डीग का सबसे बड़ा और सुंदर महल है।
- **जल प्रणाली:** यहाँ एक विशाल जलाशय है जिससे लोहे के पाइपों के माध्यम से हज़ारों फव्वारों को पानी मिलता है। वर्षा के आभास के लिए महलों की छतों पर पत्थरों को टकराने की व्यवस्था की गई थी।

6. राजस्थान की प्रमुख छतरियाँ (Cenotaphs)

छतरियाँ राजस्थान के वीरों और शासकों की स्मृति में निर्मित स्मारक हैं।

- **मूसी महारानी की छतरी (अलवर):**
 - निर्माण महाराजा विनय सिंह ने करवाया।
 - यह **80 खंभों** पर टिकी दो मंजिला छतरी है। इसकी निचली मंजिल लाल पत्थर और ऊपरी मंजिल सफेद संगमरमर से निर्मित है।
 - इसकी छतों पर रामायण और महाभारत के चित्र अंकित हैं।
- **84 खंभों की छतरी (बूंदी):** इसका निर्माण राव अनिरुद्ध सिंह ने अपने धाय भाई 'देवा' की स्मृति में करवाया था। यह तीन मंजिला है।
- **गेटोर की छतरियाँ (जयपुर):** यहाँ जयपुर के कछवाहा शासकों के शाही श्मशान घाट हैं। महाराजा **ईश्वरी सिंह** की छतरी यहाँ नहीं है (उनकी छतरी सिटी पैलेस के पास है)।
- **आहड़ की छतरियाँ (उदयपुर):** इन्हें 'महासतियां' कहा जाता है, जहाँ मेवाड़ के सिसोदिया शासकों के स्मारक हैं।

7. विश्लेषण: महलों का 'इण्डो-सारसेनिक' समन्वय

18वीं सदी के अंत तक राजस्थान के महलों में मुगल स्थापत्य के मेहराबों और राजपूत स्थापत्य की छतरियों का जो मेल हुआ, उसे 'इण्डो-सारसेनिक' शैली कहा गया। हवा महल इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। ये महल केवल विलासिता के केंद्र नहीं थे, बल्कि सामाजिक नियंत्रण के केंद्र भी थे। 'मदर्न महल' (जैसे- मुबारक महल) यह दर्शाते हैं कि राजस्थान के राजा वैश्विक स्थापत्य परिवर्तनों के प्रति सजग थे।

8. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य: उम्मेद भवन पैलेस (जोधपुर)** को 'छीतर पैलेस' भी कहा जाता है क्योंकि इसमें 'छीतर' पत्थरों का प्रयोग हुआ है। यह विश्व का सबसे बड़ा रिहायशी महल है।
- **नोट: काठ का रैन बसेरा (झालावाड़)** राजस्थान का एकमात्र लकड़ी से बना महल था (वर्तमान में अग्निकांड में नष्ट)।

- **विरोधाभास:** मूसी महारानी की छतरी को कुछ पुस्तकों में 84 खंभों का बताया जाता है, लेकिन प्रामाणिक रूप से यह **80 खंभों** की है। 84 खंभों की छतरी केवल बूंदी में है।

9. प्रमुख महल एवं छतरियाँ: त्वरित संदर्भ तालिका

नाम	स्थान	निर्माता	विशेष टिप्पणी
हवा महल	जयपुर	सवाई प्रताप सिंह	953 झरोखे, 5 मंजिला।
सिटी पैलेस	उदयपुर	महाराणा उदय सिंह	'विंडसर' की उपाधि।
डीग महल	भरतपुर	महाराजा सूरजमल	फव्वारों के लिए प्रसिद्ध।
मूसी महारानी छतरी	अलवर	महाराजा विनय सिंह	80 खंभे, रामायण चित्र।
84 खंभों की छतरी	बूंदी	राव अनिरुद्ध सिंह	धाय भाई देवा की स्मृति।
अजीत भवन	जोधपुर	—	देश का प्रथम 'हेरिटेज होटल'।

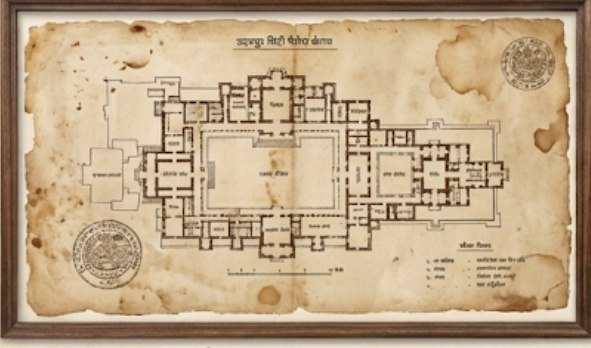
wincompete

अध्याय 4: राजस्थान के प्रमुख महल एवं छतरियाँ



महाराजा सवाई प्रताप सिंह,
जयपुर के शासक, 1799 ई.।
हवा महल के निर्माता और कला
संरक्षक।

हवा महल (जयपुर), 1799 ई.।
'राजपूत स्थापत्य का मुकुट'
और 953 झरोखे।



उदयपुर सिटी पैलेस का वास्तु-योजना, 16वीं सदी।
'राजस्थान का विंडसर' और पिछोला झील पर प्रतिबिंब।



राजस्थान की प्रमुख छतरियाँ (Cenotaphs) का मानचित्र।
मूसी महारानी और 84 खंभों की छतरी के स्थान।

अध्याय 5: मानव निर्मित जल संरचनाएं एवं पारंपरिक जल संचयन तकनीकें

यह सामग्री डॉ. गोपीनाथ शर्मा, 'राजस्थान की रजत बूंदें' (अनुपम मिश्र) और भू-जल विभाग के आधिकारिक आंकड़ों पर आधारित है।

1. राजस्थान का जल स्थापत्य: एक परिचय

मरुस्थलीय प्रदेश होने के कारण राजस्थान में जल संचयन केवल आवश्यकता नहीं, बल्कि एक 'संस्कृति' रही है। यहाँ की जल संरचनाओं में उपयोगिता (Utility) के साथ-साथ कलात्मकता (Aesthetics) का अद्भुत समन्वय मिलता है।

● मुख्य शब्द (Terminology):

- **आगोर (Agore):** वह ढलान वाला क्षेत्र जहाँ से वर्षा जल बहकर संरचना में आता है (इसे 'पायतन' भी कहते हैं)।
- **मदार:** झील या तालाब में पानी आने के निश्चित मार्ग।

2. बावड़ियाँ (Stepwells): स्थापत्य का शिखर

बावड़ियाँ राजस्थान के जल स्थापत्य का सबसे सुंदर रूप हैं। बूंदी को 'बावड़ियों का शहर' (City of Stepwells) कहा जाता है।

A. चाँद बावड़ी (आभानेरी, दौसा):

यह विश्व की सबसे गहरी और कलात्मक बावड़ी मानी जाती है।

- **निर्माण:** 8वीं-9वीं शताब्दी में निकुंभ क्षत्रिय राजा चाँद द्वारा।
- **स्थापत्य:** यह 13 मंजिला गहरी है, जिसमें लगभग 3500 सीढ़ियाँ हैं। इसकी सीढ़ियों की ज्यामितीय बनावट इतनी जटिल है कि जिस सीढ़ी से नीचे उतरते हैं, उससे वापस ऊपर आना कठिन होता है।
- **धार्मिक जुड़ाव:** इसके किनारे पर हर्षत माता का प्रसिद्ध प्रतिहार कालीन मंदिर स्थित है।

B. रानीजी की बावड़ी (बूंदी):

यह स्थापत्य कला की दृष्टि से राजस्थान की सर्वश्रेष्ठ बावड़ी मानी जाती है।

- **निर्माण:** 1699 ई. में राव राजा अनिरुद्ध सिंह की विधवा रानी **लाड कंवर नाथवती** ने करवाया था।
- **विशेषता:** इसके प्रवेश द्वार पर लगे **तोरण द्वार** और खंभों पर की गई नक्काशी बेजोड़ है। इसे 'बावड़ियों का सिरमौर' भी कहा जाता है।

C. अन्य प्रसिद्ध बावड़ियाँ:

- **नीमराणा की बावड़ी (अलवर):** 9 मंजिला गहरी।
- **नौलखा बावड़ी (झूंगरपुर):** रानी प्रीमल देवी द्वारा निर्मित।
- **तापी बावड़ी (जोधपुर):** अपनी विशिष्ट गहराई हेतु प्रसिद्ध।

3. पारंपरिक जल संचयन तकनीकें

A. टांका (Tanka):

पश्चिमी राजस्थान के घरों और किलों में वर्षा जल संचयन हेतु बनाया गया भूमिगत पक्का गड्ढा।

- **स्थापत्य:** टांके के ऊपर एक चबूतरा (आगोर) होता है जिससे पानी छनकर भीतर जाता है। **जयगढ़ दुर्ग (जयपुर)** के टांके अपनी विशालता के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं।

B. खडीन (Khadin):

यह तकनीक जल संचयन के साथ-साथ कृषि के लिए भी उपयोग की जाती है।

- **प्रणेता:** 15वीं शताब्दी में जैसलमेर के **पालीवाल ब्राह्मणों** ने इसे विकसित किया था।
- **प्रक्रिया:** दो पहाड़ियों के बीच बहते जल को मिट्टी की पाल (Embankment) बनाकर रोकना, जिससे जमीन में नमी बनी रहे और रबी की फसल (गेहूँ, चना) अच्छी हो सके।

C. झालरा (Jhalara):

झालरा स्वयं का कोई जल स्रोत नहीं होता, बल्कि यह पास की झील या तालाब के 'रिसाव' (Seepage) से पानी प्राप्त करता है। इनका उपयोग मुख्य रूप से धार्मिक अनुष्ठानों और स्नान के लिए किया जाता था (जैसे- **महामंदिर झालरा, जोधपुर**)।

D. जोहड़ (Johad):

शेखावाटी क्षेत्र में वर्षा जल को रोकने के लिए बनाए गए कच्चे/पक्के तालाब या चेक डैम। इन्हें पुनर्जीवित करने का श्रेय '**जोहड़ वाले बाबा**' (**राजेंद्र सिंह**) को जाता है।

4. राजस्थान की ऐतिहासिक झीलें

झीलें न केवल पेयजल का स्रोत थीं, बल्कि वे महलों के स्थापत्य का आधार भी थीं।

- **पिछोला झील (उदयपुर):** 14वीं सदी में एक बंजारे द्वारा निर्मित। इसके भीतर **जग मंदिर** और **जग निवास** (लेक पैलेस) स्थित हैं।
- **आना सागर (अजमेर):** 1137 ई. में **अर्णोराज (आनाजी)** द्वारा निर्मित। इसके किनारे जहाँगीर ने 'सुभाष उद्यान' (दौलत बाग) और शाहजहाँ ने 'बारादरी' का निर्माण करवाया।
- **राजसमंद झील:** महाराणा राजसिंह द्वारा निर्मित। इसके उत्तरी पाल को '**नौ चौकी**' कहा जाता है, जहाँ 25 शिलालेखों पर '**राजप्रशस्ति**' (संसार का सबसे बड़ा शिलालेख) उत्कीर्ण है।

5. विश्लेषण: जल स्थापत्य का पारिस्थितिक दर्शन

राजस्थान की ये जल संरचनाएं केवल इंजीनियरिंग का नमूना नहीं थीं, बल्कि ये 'सामुदायिक उत्तरदायित्व' का प्रतीक थीं। बावड़ियों का निर्माण अक्सर राजाओं की रानियों या सेठों द्वारा पुण्य कार्य के रूप में किया जाता था ताकि यात्रियों को प्यास न लगे। चाँद बावड़ी की गहरी सीढ़ियाँ गर्मियों में भी तापमान को 5-6 डिग्री कम रखती थीं, जो एक प्राकृतिक एयर-कंडीशनिंग का कार्य करती थी। खडीन प्रणाली आज के 'सस्टेनेबल फार्मिंग' का प्राचीन और सबसे सफल मॉडल है।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- तथ्य: गड़ीसर सरोवर (जैसलमेर) के प्रवेश द्वार को 'टीलों की प्रोल' कहा जाता है, जिसे एक गणिका ने बनवाया था।
- शब्दावली: टोबा तालाब से छोटा और गहरा जल स्रोत होता है, जो अक्सर थार के मरुस्थल में मिलता है।
- विरोधाभास: कुछ पुस्तकों में राजप्रशस्ति को 24 शिलालेखों पर बताया जाता है, लेकिन आधिकारिक रूप से यह 25 काले संगमरमर के शिलालेखों पर अंकित है।

7. जल संरचनाएं: त्वरित संदर्भ तालिका

संरचना	स्थान / क्षेत्र	निर्माता / काल	मुख्य विशेषता
चाँद बावड़ी	आभानेरी (दौसा)	राजा चाँद (प्रतिहार)	13 मंजिला, 3500 सीढ़ियाँ।
रानीजी की बावड़ी	बूंदी	रानी नाथवती	तोरण द्वारों की नक्काशी।
खडीन	जैसलमेर	पालीवाल ब्राह्मण	कृषि-जल संचयन तकनीक।
राजसमंद झील	राजसमंद	महाराणा राजसिंह	नौ चौकी पाल, राजप्रशस्ति।
कायलाना झील	जोधपुर	सर प्रताप सिंह	प्राकृतिक पहाड़ियों के बीच।

wincompete



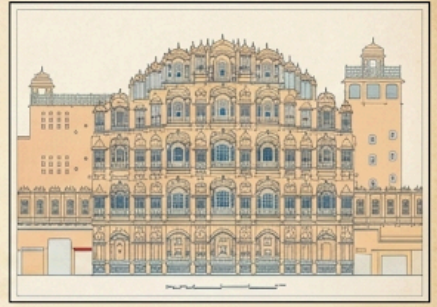
DILWARA JAIN TEMPLES (Maru-Gurjara Style)
Mt. Abu, 11th-15th C.
Patrons: Vimal Shah & Tejpal.



CHAND BAORI (Stepwell)
Abhaneri, 8th-9th C.
Pratihara Period Engineering



CHITTORGARH FORT (GIRI DURG)
- 'The Crown of Forts' -
Vijay Stambh built by Maharana Kumbha, 1437 AD.



HAWA MAHAL (Palace of Winds)
Jaipur, 1799 AD. Commissioned by Sawai Pratap Singh.
Architect: Lal Chand Usta.



SONAR FORT (Dhanvan Durg)
Jaisalmer, 1155 AD.
Built by Rawal Jaisal.

wincompete

अध्याय 6: राजस्थानी चित्रकला का उद्भव, वर्गीकरण और मेवाड़ शैली

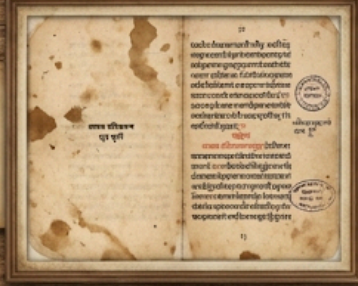


महाराणा जगत सिंह प्रथम,
मेवाड़ शासक, 1628-1652।
मेवाड़ शैली के स्वर्ण काल
और 'चित्तेरों की ओवरी' के
संस्थापक।



आर्ष रामायण (1648 ई.),
मेवाड़ शैली।
साहिबदीन और मनोहर
द्वारा चित्रित उत्कृष्ट कृति।

श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी
(1260 ई.), आहड़।
मेवाड़ शैली का प्रथम
चित्रित ग्रंथ।



राजस्थानी चित्रकला का
वर्गीकरण (चार स्कूल) का
मानचित्र। मेवाड़, मारवाड़,
ढूँढाड़ और हाड़ौती शैली।

अध्याय 6: राजस्थानी चित्रकला का उद्भव, वर्गीकरण और मेवाड़ शैली

1. राजस्थानी चित्रकला का उद्भव और विकास

राजस्थानी चित्रकला का मूल स्रोत **अजंता** की चित्रशैलियों में निहित है। कालांतर में यह अपभ्रंश, जैन और गुजरात शैली से प्रभावित होते हुए 15वीं-16वीं शताब्दी में एक स्वतंत्र 'राजस्थानी शैली' के रूप में उभरी।

- **वैज्ञानिक विभाजन:** राजस्थानी चित्रकला का पहला वैज्ञानिक विभाजन **आनंद कुमार स्वामी** ने 1916 ई. में अपनी पुस्तक 'राजपूत पेंटिंग्स' में किया था। उन्होंने इसे 'राजपूत शैली' कहा।
- **स्वर्ण काल:** 17वीं और 18वीं शताब्दी को राजस्थानी चित्रकला का 'स्वर्ण युग' माना जाता है।

2. राजस्थानी चित्रकला का वर्गीकरण (चार स्कूल)

भौगोलिक और सांस्कृतिक आधार पर राजस्थानी चित्रकला को चार मुख्य 'स्कूलों' (Schools) में विभाजित किया गया है:

स्कूल का नाम

प्रमुख उप-शैलियाँ

मेवाड़ स्कूल

उदयपुर, नाथद्वारा, चावण्ड, देवगढ़।

मारवाड़ स्कूल

जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, जैसलमेर, नागौर।

wincompete

ढूढाड स्कूल

जयपुर, आमेर, अलवर, उनियारा, शेखावाटी।

हाडौती स्कूल

कोटा, बूंदी, झालावाड।

3. मेवाड शैली: राजस्थानी चित्रकला की जननी

मेवाड शैली राजस्थान की सबसे प्राचीन और मौलिक शैली है। इसे अन्य सभी शैलियों का आधार माना जाता है।

A. ऐतिहासिक विकासक्रम:

- **प्रारंभिक ग्रंथ:** इस शैली का प्रथम चित्रित ग्रंथ '**श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी**' (1260 ई.) है, जो तेजसिंह के काल में आहड़ में चित्रित किया गया था।
- **सुपासनाह चरियं (1423 ई.):** महाराणा मोकल के समय चित्रित यह ग्रंथ स्वर्ण रंगों के प्रयोग के लिए जाना जाता है।

B. स्वर्ण काल और जगत सिंह प्रथम:

महाराणा **जगत सिंह प्रथम** (1628-1652) का शासनकाल मेवाड शैली का 'स्वर्ण काल' कहलाता है।

- **चितेरों की ओवरी:** उन्होंने राजमहल में चित्रकारों के लिए एक विभाग बनाया जिसे 'चितेरों की ओवरी' या '**तस्वीरों रो कारखानो**' कहा जाता है।

C. प्रमुख चित्रकार और उनकी कृतियाँ:

मेवाड शैली को ऊँचाइयों पर पहुँचाने में दो महान चित्रकारों का नाम सर्वोपरि है:

1. **साहिबदीन (Sahibdin):** इन्होंने **रागमाला (1628)**, रसिकप्रिया, गीत गोविंद और भागवत पुराण का चित्रण किया। इनका कार्य दरबारी भव्यता और भक्ति का मिश्रण है।
2. **मनोहर (Manohar):** साहिबदीन के समकालीन। इन्होंने साहिबदीन के साथ मिलकर '**आर्ष रामायण**' (1648) का चित्रण किया, जो मेवाड शैली की उत्कृष्ट कृति है।
3. **नसीरुद्दीन:** इन्होंने महाराणा प्रताप के समय चावण्ड में 'रागमाला' (1605) का चित्रण किया था।

4. मेवाड शैली की प्रमुख विशेषताएँ

परीक्षा के दृष्टिकोण से इस शैली के विजुअल तत्वों को समझना अनिवार्य है:

- **रंग योजना:** लाल और पीले रंगों की प्रधानता। पृष्ठभूमि में अक्सर गहरे हरे रंग का प्रयोग।
- **आकृतियाँ:** सुगठित शरीर, लम्बी नाक, छोटी ठुड्डी और **बादाम या मछली (मीन) के समान आँखें**।
- **प्रकृति चित्रण:** कदम्ब के वृक्ष का अधिक अंकन। पक्षियों में चकोर और पशुओं में हाथियों का अधिक चित्रण।
- **विषय वस्तु:** मुख्य रूप से धार्मिक (कृष्ण लीला, रामायण) और दरबारी दृश्य।

5. विश्लेषण: मेवाड शैली का संक्रमण और विकास

मेवाड शैली की विशिष्टता उसकी 'स्थायित्व' (Consistency) में है। जहाँ मुगलों के प्रभाव में अन्य शैलियों ने अपनी मौलिकता खो दी थी, मेवाड ने अपनी 'स्वदेशी' पहचान को लंबे समय तक बनाए रखा। साहिबदीन की कला में हम देखते हैं कि आकृतियाँ मानवीय भावनाओं से ओतप्रोत हैं। चावण्ड से शुरू हुई यह यात्रा उदयपुर पहुँचते-पूँचते अधिक अलंकृत हो गई। यह शैली केवल रंगों का खेल नहीं, बल्कि मेवाड के स्वाभिमान और भक्ति परंपरा का कलात्मक दस्तावेज है।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** राजस्थानी चित्रकला का नामकरण 'राजस्थानी शैली' **रामकृष्ण दास** ने सुझाया था।
- **नोट:** मेवाड़ की एक उप-शैली '**देवगढ़ शैली**' को प्रकाश में लाने का श्रेय **श्रीधर अंधारे** को जाता है।
- **विरोधाभास:** कुछ विद्वान राजस्थानी चित्रकला का उद्भव 17वीं सदी मानते हैं, परंतु आधिकारिक तौर पर 15वीं सदी के अंत और 16वीं सदी के प्रारंभ को इसकी 'स्वतंत्र पहचान' का समय माना जाता है।

7. मेवाड़ शैली: त्वरित संदर्भ तालिका (अध्याय 6)

विवरण

तथ्य

स्वर्ण काल

महाराणा जगत सिंह प्रथम

प्रमुख चित्रकार

साहिबदीन, मनोहर, नसीरुद्दीन, जगन्नाथ

प्रधान वृक्ष

कदम्ब

प्रधान पशु/पक्षी

हाथी और चकोर

प्रमुख चित्रशाला

चितेरों की ओवरी (उदयपुर)

प्रथम चित्रित ग्रंथ

श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी (1260)

wincompete

अध्याय 7: नाथद्वारा शैली और मारवाड़ स्कूल (जोधपुर व बीकानेर शैली)



महाराणा राजसिंह प्रथम, मेवाड़ शासक, 17वीं सदी उत्तरार्ध। नाथद्वारा शैली के उदय और श्रीनाथजी स्थापना के समय शासक।



पिछवाई कला (नाथद्वारा शैली)। श्रीनाथजी की मूर्ति के पीछे की दीवार पर लगने वाला धार्मिक चित्रण। केले और गायों का अंकन।

ढोला-मारु (जोधपुर शैली)। मारवाड़ की लोक कथा पर आधारित चित्र। ऊँट और रेगिस्तान का चित्रण।



मारवाड़ स्कूल (जोधपुर व बीकानेर) का मानचित्र। उस्ता कला और मथेरणा कला के प्रमुख केंद्र।

चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ

अध्याय 7: नाथद्वारा शैली और मारवाड़ स्कूल (जोधपुर व बीकानेर शैली)

1. नाथद्वारा शैली: मेवाड़ और ब्रज का अद्भुत संगम

नाथद्वारा शैली मेवाड़ स्कूल की एक उप-शैली है, जिसका उदय 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में महाराणा राजसिंह के समय हुआ, जब श्रीनाथजी की मूर्ति सिहाड़ (नाथद्वारा) में स्थापित की गई।

- **धार्मिक आधार:** यह शैली पूर्णतः **वल्लभ संप्रदाय** (पुष्टि मार्ग) से प्रभावित है। इसमें भगवान श्रीनाथजी के स्वरूप और उनकी लीलाओं का प्रधानता से चित्रण हुआ है।
- **पिछवाई कला (Pichwai Art):** श्रीनाथजी की मूर्ति के पीछे दीवार पर लगाए जाने वाले बड़े आकार के कपड़े पर किए गए चित्रण को 'पिछवाई' कहा जाता है।
 - **मुख्य विषय:** कृष्ण लीला, यशोदा, गोपियाँ, और नंद के ग्वाल।
 - **विशिष्ट तत्व:** पिछवाइयों में **केले के वृक्ष** और **गायों** का अंकन अनिवार्य रूप से मिलता है।
- **प्रमुख चित्रकार:** बाबा रामचंद्र, नारायण, चतुर्भुज, रामलिंग।
 - **महिला चित्रकार (अत्यंत महत्वपूर्ण):** **कमला और इलायची**। (RPSC परीक्षाओं में अक्सर पूछा जाता है)।

2. मारवाड़ स्कूल: जोधपुर शैली

जोधपुर शैली मारवाड़ की लोक-संस्कृति, वीरता और प्रेम-आख्यानों का दर्पण है।

- **प्रारंभिक विकास:** राव मालदेव के समय 'उत्तराध्ययन सूत्र' और चौखेलाव महल के भीति चित्रों से इसका व्यवस्थित रूप सामने आता है।
- **स्वर्ण काल:** महाराजा **मानसिंह** (1803-1843) का काल इस शैली का स्वर्ण युग माना जाता है। उनके समय 'नाथ संप्रदाय' से संबंधित चित्रों की बहुलता रही।

- **प्रमुख विषय:** ढोला-मारू, मूमल-मेहेंदर, रूपमती-बाज बहादुर और पंचतंत्र की कहानियाँ।
- **शारीरिक विशेषताएँ:** ऊँची पगड़ी (मंदील), गठीला शरीर, खंजन पक्षी के समान आँखें और ऊँची मूँछें।
- **प्रमुख चित्रकार:** अमरदास भाटी, दाना भाटी, शिवदास, विशनदास, मतिराम और जीतमल।

3. बीकानेर शैली: मुगल और यूरोपीय प्रभाव

बीकानेर शैली का उद्भव महाराजा रायसिंह के समय हुआ, जिन्होंने मुगल कलाकारों को संरक्षण दिया।

- **स्वर्ण काल:** महाराजा **अनूप सिंह** का शासनकाल इस शैली का 'स्वर्ण युग' है।
- **विशिष्ट पहचान:** बीकानेर शैली के चित्रकार अपने चित्रों के नीचे **अपना नाम और तिथि** अंकित करते थे, जो राजस्थानी चित्रकला की अन्य शैलियों में दुर्लभ है।
- **कला के दो मुख्य रूप:**
 1. **उस्ता कला (Usta Art):** ऊँट की खाल पर सोने की सूक्ष्म नक्काशी और मुनव्वत का काम। इसके प्रसिद्ध कलाकार **हि सामुद्दीन उस्ता** रहे हैं।
 2. **मथेरणा कला:** जैन चित्रकारों द्वारा पौराणिक कथाओं का गीली दीवार पर चित्रण (आला-गीला पद्धति)।
- **प्रमुख चित्रकार:** अली रजा, हामिद रुकनुद्दीन, शाह मोहम्मद। यहाँ मुस्लिम चित्रकारों ने हिंदू देवी-देवताओं का सुंदर चित्रण किया है।

4. रंग, वृक्ष और पशु-पक्षी: एक तुलनात्मक दृष्टि (Visual Analysis)

शैली	प्रधान रंग	प्रधान वृक्ष	प्रधान पशु/पक्षी
नाथद्वारा	पीला और हरा	केला	गाय
जोधपुर	पीला (सुनहरा)	आम	ऊँट, कौआ, घोड़ा
बीकानेर	बैंगनी, मटमैला	आम और खजूर	ऊँट और घोड़े

5. विश्लेषण: लोक बनाम दरबारी संस्कृति का द्वंद्व

जहाँ नाथद्वारा शैली एक '**धार्मिक और भावनात्मक**' शैली है जो मंदिर की चारदीवारी के इर्द-गिर्द सिमटी रही, वहीं जोधपुर शैली '**लोक-आख्यानो**' के माध्यम से मरुस्थल की कठोरता और प्रेम को अभिव्यक्त करती है। बीकानेर शैली इन दोनों से भिन्न है; यह '**तकनीकी और समावेशी**' है। बीकानेर में हिंदू-मुस्लिम सांस्कृतिक समन्वय का श्रेष्ठ रूप मिलता है, जहाँ मुस्लिम उस्ता कलाकारों ने भागवत पुराण के चित्रों में जो सजीवता भरी, वह भारतीय धर्मनिरपेक्ष कला का अनुपम उदाहरण है।

6. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** जोधपुर शैली में बादलों का चित्रण '**गोलाकार**' और गहरे रंगों में किया जाता है, जो वर्षा की प्रतीक्षा का प्रतीक है।
- **नोट:** बीकानेर की '**आला-गीला**' पद्धति (जिसे 'फ्रेस्को बुनो' भी कहते हैं) सर्वप्रथम इटली से भारत आई थी, जिसे बीकानेर के कलाकारों ने आत्मसात किया।
- **विरोधाभास:** कुछ विद्वान नाथद्वारा शैली को मेवाड़ की उप-शैली मानते हैं, जबकि इसके विशिष्ट धार्मिक स्वरूप के कारण आधुनिक शोध इसे एक 'स्वतंत्र संप्रदाय शैली' के रूप में भी देखते हैं।

7. अध्याय 7: त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Reference)

विशेषता	नाथद्वारा शैली	जोधपुर शैली	बीकानेर शैली
मुख्य केंद्र	श्रीनाथजी मंदिर	मेहरानगढ़, चोखेलाव	जूनागढ़, अनूप महल
प्रसिद्ध चित्र	पिछवाई	ढोला-मारू	उस्ता कला
प्रमुख चित्रकार	नारायण, चतुर्भुज	दाना भाटी, शिवदास	अली रजा, रुकनुद्दीन
महिला कलाकार	कमला, इलायची	—	—
विशेषता	कृष्ण भक्ति	ऊँची पगड़ी, नाथ प्रभाव	नाम व तिथि अंकित करना

wincompete

अध्याय 8: किशनगढ़ शैली और हाड़ौती स्कूल (बूंदी व कोटा शैली)



राजा सावंत सिंह (नागरीदास),
किशनगढ़ शासक, 1748-1764।
किशनगढ़ शैली के स्वर्ण काल के
कवि और संरक्षक।



बणी-ठणी (किशनगढ़ शैली)।
निहालचंद द्वारा चित्रित।
'भारत की मोनालिसा' और आदर्श
नारी सौंदर्य का प्रतीक।

शिकार का दृश्य (कोटा शैली)।
महाराव उम्मेद सिंह के काल में
चित्रित। घने जंगलों में राजा और
रानियों द्वारा शिकार।



वर्षा में नाचता मोर (बूंदी शैली)।
प्रकृति और पशु-पक्षियों का
सजीव चित्रण। हाड़ौती स्कूल
का उत्कृष्ट उदाहरण।



अध्याय 8: किशनगढ़ शैली और हाड़ौती स्कूल (बूंदी व कोटा शैली)

1. किशनगढ़ शैली: राजस्थानी चित्रकला का 'सौंदर्य शिखर'

किशनगढ़ शैली मारवाड़ स्कूल की सबसे विशिष्ट उप-शैली है, जिसने अपनी विलक्षण नारी-सौंदर्य योजना के कारण विश्व स्तर पर पहचान बनाई है।

- **स्वर्ण काल:** राजा सावंत सिंह (नागरीदास) का शासनकाल (1748-1764) इस शैली का चरम उत्कर्ष काल था। वे स्वयं एक कवि और चित्रकार थे।
- **बणी-ठणी (Bani-Thani):** यह इस शैली की विश्व प्रसिद्ध कृति है।
 - **चित्रकार:** निहाल चंद (मोरध्वज निहालचंद)।
 - **विशेषता:** इसमें नारी सौंदर्य का आदर्श चित्रण है— लंबी सुराहीदार गर्दन, धनुषाकार भृकुटि (भौंहे), कजरारी खंजन आँखें, लंबी तीखी नाक और पारदर्शी ओढ़नी।
 - **उपाधि:** एरिक डिकिसन ने इसे 'भारत की मोनालिसा' (Monalisa of India) कहा है।
 - **डाक टिकट:** भारत सरकार ने 1973 में इस पर डाक टिकट जारी किया था।
- **प्रमुख तत्व:** चित्रों में गुलाबी और सफेद रंगों की प्रधानता, झीलों (गुंदोलाव तालाब) का चित्रण, और राधा-कृष्ण की लीलाओं का रूमानी अंकन।
- **प्रमुख चित्रकार:** निहाल चंद, अमरचंद, सीताराम, बदन सिंह, नानकराम।

2. हाड़ौती स्कूल: बूंदी शैली (प्रकृति और पशु-पक्षी चित्रण)

बूंदी शैली को 'पशु-पक्षियों की चित्रशैली' कहा जाता है। यह राजस्थानी चित्रकला की सबसे जीवंत और रंगीन शैलियों में से एक है।

- **विशेषता:** यहाँ प्रकृति का सजीव चित्रण मिलता है। सघन वन, वर्षा में नाचते हुए मोर, ऊँचे पहाड़ और जल में अठखेलियां करते पक्षी इस शैली की पहचान हैं।
- **रंग योजना:** सुनहरे और चांदी के रंगों का प्रचुर प्रयोग। लाल, हरे और नीले रंगों की अद्भुत चमक।

- **चित्रशाला (Chitrashala):** महाराव उम्मेद सिंह के काल में निर्मित बूंदी दुर्ग की 'चित्रशाला' को 'भीति चित्रों का स्वर्ग' कहा जाता है।
- **स्वर्ण काल:** राव सुरजन सिंह के समय प्रारंभ हुई यह शैली महाराव उम्मेद सिंह के काल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची।
- **प्रमुख विषय:** रागमाला, बारामासा, रसिकप्रिया और राग-रागनियाँ।

3. हाड़ौती स्कूल: कोटा शैली (शिकार के दृश्य)

कोटा शैली प्रारंभ में बूंदी शैली से प्रभावित थी, लेकिन 18वीं सदी में इसने अपनी स्वतंत्र पहचान 'शिकार शैली' (Shikar Style) के रूप में बनाई।

- **प्रमुख विषय:** इस शैली का मुख्य विषय 'शिकार' है। घने जंगलों में शेर का शिकार करते हुए राजाओं के दृश्य यहाँ की विशेषता हैं।
- **द्वितीय तथ्य:** कोटा शैली विश्व की एकमात्र ऐसी शैली है जिसमें **रानियों और महिलाओं को भी शिकार करते हुए** दिखाया गया है।
- **स्वर्ण काल:** महाराव उम्मेद सिंह प्रथम का शासनकाल।
- **विशेषता:** गहरी हरियाली युक्त पृष्ठभूमि, लंबी कजरारी आँखें और बादलों का उमड़ता हुआ चित्रण।
- **प्रमुख चित्रकार:** डालू, लक्ष्मीराम, रघुनाथ, गोविंदराम और नूर मोहम्मद। (डालू द्वारा चित्रित 'रागमाला' कोटा शैली का सबसे बड़ा ग्रंथ है)।

4. शारीरिक और प्राकृतिक चित्रण: तुलनात्मक विश्लेषण

विशेषता	किशनगढ़ शैली	बूंदी शैली	कोटा शैली
नारी आकृति	लंबी, सुराहीदार गर्दन	मध्यम कद, मांसल शरीर	सुगठित, शिकार मुद्रा
नेत्र	खंजन पक्षी के समान (कटाक्ष)	परवल की फांक जैसे	मृगनयनी (हिरण जैसे)
प्रधान रंग	सफेद और गुलाबी	सुनहरा और हरा	नीला और हरा
प्रधान विषय	राधा-कृष्ण का प्रेम	पशु-पक्षी, रागमाला	शिकार (Shikar)

5. विश्लेषण: किशनगढ़ बनाम हाड़ौती का सौंदर्यशास्त्र

किशनगढ़ शैली जहाँ 'रूमानी अध्यात्म' (Romantic Spiritualism) की चरम सीमा है, जहाँ मानवीय प्रेम को राधा-कृष्ण के माध्यम से दैवीय रूप दिया गया है, वहीं हाड़ौती स्कूल (विशेषकर बूंदी) 'प्रकृतिवाद' (Naturalism) का उत्कृष्ट उदाहरण है। बूंदी के कलाकार ने महलों के बाहर की दुनिया को कैनवास पर उतारा, जबकि किशनगढ़ के कलाकारों ने अंतर्मन की कल्पना और सौंदर्य को। कोटा शैली का 'शिकार चित्रण' तत्कालीन राजपूत समाज की वीरता और साहसी जीवनशैली का सजीव राजनैतिक-सांस्कृतिक दस्तावेज है।

6. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** बणी-ठणी के नाक के आभूषण को 'वेसरी' (Besri) कहा जाता है, जो इस शैली की एक विशिष्ट पहचान है।
- **नोट:** किशनगढ़ शैली को प्रकाश में लाने का श्रेय **एरिक डिकिंसन** और **फैयाज अली** को जाता है।

- **विरोधाभास:** कुछ विद्वान कोटा शैली को बूंदी शैली की ही एक शाखा मानते हैं, परंतु 'नारी शिकार' और 'गहन वन चित्रण' जैसे विशिष्ट तत्वों के कारण आधुनिक कला समीक्षक इसे एक स्वतंत्र पूर्ण शैली मानते हैं।

7. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Reference)

शैली	मुख्य आकर्षण	प्रमुख चित्रकार	स्वर्ण काल
किशनगढ़	बणी-ठणी, चांदनी रात की संगोष्ठी	निहालचंद, लाडली दास	सावंत सिंह
बूंदी	पशु-पक्षी, वर्षा में नाचता मोर	सुरजन, अहमद अली	उम्मेद सिंह
कोटा	शिकार के दृश्य, महिला शिकार	डालू, लक्षीराम	उम्मेद सिंह प्रथम

wincompete

अध्याय 9: ढूँढाड़ स्कूल (आमेर, जयपुर, अलवर) और शेखावाटी के भीति चित्र



सवाई प्रताप सिंह, जयपुर शासक,
1778-1803। जयपुर शैली के
स्वर्ण काल के संरक्षक और
'सूरतखाना' के विस्तारक।

हाथी दांत पर चित्रण (अलवर
शैली)। मूलचंद द्वारा चित्रित
गणिका का चित्र। सूक्ष्मता और
'बलो' हाशिए का उदाहरण।



आदमकद चित्र (जयपुर शैली)।
चित्रकार साहिबराम द्वारा निर्मित
महाराजा ईश्वरी सिंह का प्रथम
आदमकद चित्र।



शेखावाटी का भीति चित्र (मंडावा)।
पर 'आरायश' पद्धति में बना चित्र।
रेलगाड़ी और यूरोपीय प्रभाव का
सजीव अंकन।

अध्याय 9: ढूँढाड़ स्कूल (आमेर, जयपुर, अलवर) और शेखावाटी के भीति चित्र

1. ढूँढाड़ स्कूल: आमेर और जयपुर शैली

ढूँढाड़ स्कूल की सबसे बड़ी विशेषता इस पर पड़ने वाला **मुगल प्रभाव** है, क्योंकि कछवाहा शासकों के मुगलों से संबंध सबसे घनिष्ठ थे।

A. आमेर शैली (प्रारंभिक चरण):

- **विशेषता:** इसमें प्राकृतिक रंगों का अधिक प्रयोग हुआ। 'रज्जनामा' (महाभारत का फारसी अनुवाद) के चित्र इसी शैली में मिर्जा राजा मानसिंह के समय बने।
- **भीति चित्र:** आमेर के महलों और 'बैराठ के गार्डन' के भीति चित्र मुगल-राजपूत समन्वय का प्रारंभिक उदाहरण हैं।

B. जयपुर शैली (चरम उत्कर्ष):

- **स्वर्ण काल:** सवाई प्रताप सिंह (1778-1803) का काल जयपुर शैली का स्वर्ण युग माना जाता है। उनके समय 'सूरतखाना' (चित्रशाला) में 50 से अधिक कलाकार कार्यरत थे।
- **आदमकद चित्र (Life-size Portraits):** यह इस शैली की सबसे अनूठी विशेषता है। चित्रकार साहिबराम ने महाराजा ईश्वरी सिंह का प्रथम आदमकद चित्र बनाया था।
- **प्रमुख तत्व:** चित्रों में हरे रंग की प्रधानता, हाशिए (Borders) में लाल रंग का प्रयोग और उद्यानों का भव्य अंकन।
- **प्रमुख चित्रकार:** साहिबराम, लालचंद (जानवरों की लड़ाई के चित्रकार), रामजीदास, गोविंदा।

2. अलवर शैली: सूक्ष्मता और नवीनता

अलवर शैली ढूँढाड़ स्कूल की एक विशिष्ट शाखा है, जिसमें ईरानी, मुगल और जयपुर शैली का मिश्रण मिलता है।

- **हाथी दांत पर चित्रण (Ivory Painting):** अलवर शैली अपनी सूक्ष्मता के लिए प्रसिद्ध है। चित्रकार मूलचंद हाथी दांत के फलकों पर चित्रण करने में सिद्धहस्त थे।
- **बलो चित्रण (Baslo):** चित्रों के चारों ओर सुंदर और अलंकृत हाशिए (Border) बनाना, जिन्हें 'बलो' कहा जाता है, इस शैली की विशिष्टता है।

- **गणिकाओं का चित्रण:** राजस्थान की अन्य शैलियों के विपरीत, यहाँ गणिकाओं (वेश्याओं) के चित्र प्रचुरता में मिलते हैं।
- **स्वर्ण काल:** महाराजा **विनय सिंह** का शासनकाल।
- **प्रमुख चित्रकार:** बलदेव, डालचंद, शालिग्राम, जमुनादास, छोटेलाल।

3. शेखावाटी के भीति चित्र: 'ओपन आर्ट गैलरी'

शेखावाटी क्षेत्र (झुंझुनू और सीकर) अपनी विशाल हवेलियों और उन पर किए गए अद्भुत भीति चित्रों के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

- **उपनाम:** इसे 'विश्व की सबसे बड़ी ओपन आर्ट गैलरी' कहा जाता है।
- **आरायश पद्धति (Fresco-Buno):** गीली दीवार पर चित्रण करने की कला, जिसे राजस्थान में 'आला-गीला' या 'पणो' भी कहा जाता है। यह पद्धति मूलतः इटली से आई थी।
- **विषय वस्तु:** प्रारंभ में धार्मिक और लोक कथाएँ (जैसे- ढोला-मारू) चित्रित थीं, लेकिन 19वीं सदी में यहाँ **यूरोपीय प्रभाव** (रेलगाड़ी, मोटर कार, हवाई जहाज, और ग्रामोफोन) का सजीव चित्रण मिलता है।
- **प्रमुख केंद्र:** नवलगढ़, मंडावा, फतेहपुर, रामगढ़, और लक्ष्मणगढ़ की हवेलियाँ।
- **रंग योजना:** इसमें मुख्य रूप से नीले और लाल रंगों का प्रयोग हुआ है।

4. ढूँढाड़ स्कूल: तुलनात्मक विश्लेषण तालिका

विशेषता	आमेर / जयपुर शैली	अलवर शैली	शेखावाटी शैली
प्रधान रंग	हरा और केसरिया	स्वर्ण और जवारी	नीला और कथई
विशिष्टता	आदमकद चित्र, कछवाहा दरबारी वैभव	हाथी दांत पर चित्रण, गणिकाएं	हवेलियों के भीति चित्र (Fresco)
मुगल प्रभाव	सर्वाधिक	मध्यम (ईरानी प्रभाव भी)	न्यूनतम (यूरोपीय प्रभाव अधिक)
चित्रकार	साहिबराम, लालचंद	मूलचंद, बलदेव	स्थानीय चितेरे (चेजारे)

5. विश्लेषण: ढूँढाड़ शैली का 'कॉस्मोपॉलिटन' चरित्र

ढूँढाड़ स्कूल की चित्रकला राजस्थान की अन्य शैलियों की तुलना में अधिक 'वैश्विक' रही है। जयपुर शैली ने जहाँ मुगलों से भव्यता ली, वहीं अलवर शैली ने अपनी सूक्ष्मता में ईरानी और ब्रिटिश प्रभाव को आत्मसात किया। शेखावाटी के भीति चित्र सामंती समाज के 'आधुनिकीकरण' का दर्पण हैं; एक ही दीवार पर जहाँ गोवर्धन पर्वत उठाए कृष्ण हैं, वहीं पास में धुआँ उड़ती रेलगाड़ी है। यह चित्रकला केवल सौंदर्य के लिए नहीं, बल्कि तत्कालीन बदलते सामाजिक-तकनीकी परिवेश का दस्तावेज है।

6. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** जयपुर के महाराजा **सवाई जयसिंह** ने कला की प्रगति के लिए **36 कारखानों** की स्थापना की थी, जिनमें से 'सूरतखाना' चित्रकला से संबंधित था।
- **नोट:** **लालचंद** ने जानवरों की लड़ाइयों (जैसे- हाथियों की भिड़ंत) के सजीव चित्र बनाकर जयपुर शैली को नई दिशा दी थी।

- **विरोधाभास:** 'आरायश' पद्धति को अक्सर केवल शेखावाटी से जोड़ा जाता है, परंतु जयपुर के भवनों में भी इस पद्धति का प्रचुर प्रयोग हुआ है।

7. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Reference)

विवरण

तथ्य

आदमकद चित्र के जनक

साहिबराम (जयपुर)

हाथी दांत चित्रण का केंद्र

अलवर (मूलचंद)

आरायश पद्धति (आला-गीला)

गीली सतह पर भीति चित्रण

यूरोपीय प्रभाव का केंद्र

शेखावाटी की हवेलियाँ

हाशिए (Borders) का नाम

बसलो (अलवर)

wincompete



EARLY MEWAR STYLE (Supasannah Chariyam).
Painted 1423 AD. Patron: Maharana Mokai. Use of Gold.



HADOTI SCHOOL (Bundi & Kota Styles). 18th C.
Themes: Nature, Birds & Royal Hunts (Shikar).



KISHANGARH STYLE
(Bani-Thani - 'Monalisa of India').
Painter: Nihal Chand.
Patron: Raja Sawai Singh (Nagari Das).
Mid-18th C.



MEWAR GOLDEN ERA (Ragamala).
Painted 1628 AD by Sahibdin. Patron: Maharana Jagat Singh I.
Chiteron ki Ovari.



SHEKHAWATI FRESCOES (Open Art Gallery). 19th C.
Technique: Arayash (Fresco-Buno). Theme: Mythological & Colonial influence.

अध्याय 10: अन्य उप-शैलियाँ और चित्रकला की आधुनिक प्रवृत्तियाँ।

1. विशिष्ट उप-शैलियाँ: समन्वय का स्थापत्य

इन उप-शैलियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये दो प्रमुख स्कूलों की सीमाओं पर विकसित हुईं, जिससे इनमें मिश्रित प्रभाव दिखाई देता है।

A. देवगढ़ शैली (मेवाड़ स्कूल):

- **उद्भव:** 1680 ई. में रावत द्वारिकादास चूंडावत के समय।
- **विशेषता:** इसमें मेवाड़, मारवाड़ और ढूँढाड़ तीनों शैलियों का मिश्रण है। इसमें **पीले और हरे** रंगों की प्रधानता है।
- **प्रसारक:** इस शैली को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उजागर करने का श्रेय **डॉ. श्रीधर अंधारे** को जाता है।
- **प्रमुख चित्रकार:** बगता, कंवला, चौखा, बैजनाथ।

B. उनियारा शैली (ढूँढाड़ स्कूल):

- **स्थान:** टोंक (उनियारा ठिकाना)।
- **समन्वय:** इसमें **जयपुर (ढूँढाड़) और बूंदी (हाड़ौती)** शैली का अद्भुत मिश्रण मिलता है।
- **प्रमुख चित्रकार:** धीरा, बख्ता, काशी, रामलखन।
- **विषय:** राम-सीता के जीवन और रागमाला के सुंदर चित्र।

C. जैसलमेर शैली (मारवाड़ स्कूल):

- **विशिष्टता:** यह राजस्थान की एकमात्र ऐसी शैली है जिस पर **मुगल या बाहरी प्रभाव शून्य** है। यह अपनी पूर्णतः मौलिकता के लिए जानी जाती है।
- **मुख्य विषय:** **मूमल** (जैसलमेर की राजकुमारी) का चित्रण इस शैली की प्रमुख पहचान है।
- **स्वर्ण काल:** महारावल मूलराज द्वितीय का काल।

2. राजस्थानी चित्रकला की आधुनिक प्रवृत्तियाँ

20वीं शताब्दी के प्रारंभ में पारंपरिक दरबारी शैली के स्थान पर यथार्थवाद और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति ने जन्म लिया।

- **कुंदन लाल मिस्त्री:** इन्हें राजस्थानी चित्रकला के **आधुनिक काल का प्रणेता** माना जाता है। उन्होंने पारंपरिक विषयों को यूरोपीय तकनीक (Shadow and Perspective) के साथ प्रस्तुत किया।
- **रामगोपाल विजयवर्गीय:** इन्होंने 'मेघदूत' और 'अभिज्ञान शाकुंतलम' जैसे ग्रंथों के आधार पर नवीन चित्र शैली विकसित की। वे बंगाल शैली से भी प्रभावित थे।

3. आधुनिक युग के प्रमुख चित्रकार एवं उनके उपनाम

RPSC परीक्षाओं में चित्रकारों के 'उपनाम' (उपाधियाँ) विशेष रूप से पूछे जाते हैं:

1. **सौभाग्यमल गहलोट:** 'नीड़ का चितेरा' (पक्षियों के घोंसलों के सजीव चित्रण हेतु)।
2. **परमानंद चोयल:** 'भैंसों का चितेरा' (भैंसों के विभिन्न स्वरूपों के यथार्थवादी चित्रण हेतु)।
3. **देवकी नंदन शर्मा:** 'पशु-पक्षियों का चितेरा' (विशेषकर मोर के चित्रण में सिद्धहस्त)।
4. **भूरसिंह शेखावत:** 'गाँवों का चितेरा' (ग्रामीण जीवन, वृद्धों और किसानों के सजीव चित्रों हेतु)।
5. **जगमोहन माथोडिया:** 'श्वानों का चितेरा' (कुत्तों के विविध चित्रण हेतु)।
6. **गोवर्धन लाल जोशी 'बाबा':** 'भीलों का चितेरा' (जनजातीय जीवन और 'गवरी' नृत्य के सजीव चित्रण हेतु)।

4. विश्लेषण: परंपरा से आधुनिकता का संक्रमण

राजस्थानी चित्रकला का सफर 13वीं सदी के 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी' से शुरू होकर आधुनिक 'चोयल' और 'विजयवर्गीय' तक विस्तृत है। जहाँ प्रारंभिक काल में चित्रकार राजाओं और ईश्वर (राधा-कृष्ण) के इर्द-गिर्द सिमटे हुए थे, वहीं आधुनिक चित्रकारों ने 'आम आदमी', 'प्रकृति के उपेक्षित जीव' और 'ग्रामीण यथार्थ' को अपना विषय बनाया। जैसलमेर शैली का मुगल प्रभाव से मुक्त रहना यह सिद्ध करता है कि कठिन भौगोलिक परिस्थितियों ने कला की मौलिकता को संरक्षण प्रदान किया। आज की राजस्थानी चित्रकला अपनी जड़ों से जुड़ी होने के बावजूद वैश्विक प्रयोगों के लिए खुली है।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** किशन शर्मा राजस्थान के प्रसिद्ध चित्रकार हैं जिन्होंने **राई के दाने** पर मीरा का चित्र बनाकर गिनीज बुक में नाम दर्ज कराया।
- **नोट:** **ज्योति स्वरूप** अपने चित्रों में 'जंगलों' के रहस्यमयी चित्रण के लिए जाने जाते हैं।
- **विरोधाभास:** कुछ स्रोतों में 'हाथी दांत' चित्रण केवल जयपुर से जोड़ा जाता है, परंतु आधिकारिक रूप से इसकी 'सूक्ष्म शैली' का विकास **अलवर** में चरम पर था।

6. चित्रकला की अन्य शैलियाँ एवं आधुनिक कलाकार: त्वरित संदर्भ तालिका

श्रेणी / उपनाम	संबंधित कलाकार	विशेष टिप्पणी
भैंसों का चितेरा	परमानंद चोयल	कोटा से संबंधित, यथार्थवाद।
भीलों का चितेरा	गोवर्धन लाल जोशी	मेवाड़ अंचल का जनजातीय चित्रण।
नीड़ का चितेरा	सौभाग्यमल गहलोट	पक्षी प्रेम और घोंसलों का अंकन।

गाँवों का चितेरा

भूरसिंह शेखावत

ग्रामीण संस्कृति के चितेरे।

जैसलमेर शैली

मूमल चित्रण

पूर्णतः स्थानीय, बाहरी प्रभाव मुक्त।

देवगढ़ शैली

श्रीधर अंधारे

मेवाड़, मारवाड़ और ढूँढाड़ का संगम।

अध्याय 11: राजस्थान की मीनाकारी, ब्लू पॉटरी और टेराकोटा कला



कृपाल सिंह शेखावत, जयपुर।
ब्लू पॉटरी के शिल्प गुरु
और पद्मश्री विजेता।
25 नए रंगों के प्रयोक्ता।



ब्लू पॉटरी कलश (जयपुर)।
सवाई रामसिंह द्वितीय के
स्वर्ण काल का नमूना।
मिट्टी रहित पॉटरी।



मीनाकारी आभूषण (जयपुर)।
कुदरत सिंह जैसे कलाकारों की
कला। लाल रंग की मीनाकारी
का उदाहरण।



मोलेला टेराकोटा (राजसमंद)।
मोहनलाल कुम्हार की कला।
मिट्टी और गधे के गोबर से
निर्मित मृणमूर्ति।

हस्तशिल्प

अध्याय 11: राजस्थान की मीनाकारी, ब्लू पॉटरी और टेराकोटा कला

यह सामग्री डॉ. जयसिंह नीरज, डॉ. गोपीनाथ शर्मा और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के 'राजस्थान के हस्तशिल्प' नामक प्रामाणिक शोध ग्रंथों पर आधारित है।

1. मीनाकारी (Meenakari): धातुओं पर रंगों का जादू

मीनाकारी सोने-चांदी जैसे आभूषणों पर रंग भरने की कला है। इसे 'हस्तशिल्प की आत्मा' कहा जाता है।

- **उद्भव एवं आगमन:** यह मूलतः फारस (ईरान) की कला है। मुगल काल में यह लाहौर पहुँची। आमेर के महाराजा मानसिंह प्रथम 16वीं शताब्दी में लाहौर से पाँच कुशल कलाकारों को जयपुर लेकर आए, जिससे राजस्थान में इस कला का विधिवत श्रीगणेश हुआ।
- **प्रमुख केंद्र:** जयपुर मीनाकारी का सबसे बड़ा केंद्र है।

- **कलात्मक प्रक्रिया:** सोने या चांदी की सतह को खोदकर उसमें कांच के समान रंगीन चूर्ण भरा जाता है और फिर उसे उच्च तापमान पर गर्म किया जाता है।
 - **कुदरत सिंह:** इन्हें मीनाकारी का 'जादूगर' कहा जाता है। उन्हें 1988 में **पद्मश्री** से सम्मानित किया गया था।
- **प्रकार:**
 - **लाल रंग की मीनाकारी:** यह केवल जयपुर में होती है और अत्यंत कठिन मानी जाती है।
 - **कांच पर मीनाकारी (थेवा कला):** यह प्रतापगढ़ की विशिष्टता है (जिसका विवरण आगे के अध्यायों में आएगा)।

2. ब्लू पॉटरी (Blue Pottery): मिट्टी के बिना मृदा कला

जयपुर की ब्लू पॉटरी विश्व स्तर पर अपनी विशिष्ट रंग योजना और चमक के लिए जानी जाती है।

- **इतिहास:** यह कला फारस से मुगल दरबार और फिर जयपुर आई। जयपुर के महाराजा **सवाई रामसिंह द्वितीय** के काल को ब्लू पॉटरी का 'स्वर्ण काल' माना जाता है। उन्होंने अपने दो कलाकारों— **कालू और चूरामणि** को प्रशिक्षण हेतु दिल्ली भेजा था।
- **विशेषता (Exam Special):** ब्लू पॉटरी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें **मिट्टी (Clay) का प्रयोग नहीं होता**। इसके बजाय क्वार्ट्ज पाउडर, कांच, मुल्लानी मिट्टी, गोंद और साजी खार के मिश्रण का उपयोग किया जाता है।
- **रंग:** इसमें मुख्य रूप से **नीले** (कोबाल्ट ऑक्साइड) और **हरे** (कॉपर ऑक्साइड) रंगों का प्रयोग होता है।
- **कृपाल सिंह शेखावत:** इन्हें ब्लू पॉटरी का 'शिल्प गुरु' माना जाता है। उन्होंने पारंपरिक नीले रंग के स्थान पर **25 नए रंगों** का प्रयोग कर 'कृपाल शैली' विकसित की। उन्हें 1974 में **पद्मश्री** से सम्मानित किया गया।

3. टेराकोटा कला (Terracotta): मोलेला की मिट्टी का वैभव

मिट्टी को पकाकर मूर्तियाँ और बर्तन बनाने की कला 'टेराकोटा' कहलाती है।

- **प्रमुख केंद्र:** राजसमंद जिले का **मोलेला गाँव**। यह गाँव अपनी मृणमूर्तियों (Clay Idols) के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है।
- **निर्माण तकनीक:** यहाँ की मिट्टी में **गंधे का गोबर** मिलाया जाता है, जो सूखने के बाद मूर्तियों को मजबूती प्रदान करता है।
- **धार्मिक महत्व:** मोलेला के कलाकार मुख्य रूप से लोक देवताओं (जैसे- **देवनारायण जी, धर्मराज जी**) की मूर्तियाँ और उनके 'फड़' जैसे मिट्टी के फलक बनाते हैं, जिन्हें आदिवासी समाज श्रद्धापूर्वक खरीदता है।
- **मोहनलाल कुम्हार:** मोलेला के इस प्रसिद्ध कलाकार को टेराकोटा कला में उनके अतुलनीय योगदान के लिए **पद्मश्री (2012)** से सम्मानित किया गया है।

4. विश्लेषण: तकनीक और परंपरा का अंतर्संबंध

राजस्थान के हस्तशिल्प में 'ब्लू पॉटरी' और 'टेराकोटा' विरोधाभासी तकनीक के उदाहरण हैं। जहाँ ब्लू पॉटरी एक 'अभिजात्य कला' थी जो महलों की शोभा बढ़ाती थी और जिसमें मिट्टी का प्रयोग नहीं होता था, वहीं टेराकोटा एक 'जन-सामान्य की कला' है जो विशुद्ध रूप से स्थानीय मिट्टी और नैसर्गिक खाद पर आधारित है। मानसिंह प्रथम द्वारा लाहौर से लाए गए कलाकारों ने जयपुर को जो 'मीनाकारी' की पहचान दी, उसने आगे चलकर जयपुर को विश्व का 'रत्न केंद्र' (Gem City) बना दिया। इन हस्तकलाओं ने राजस्थान की अर्थव्यवस्था में 'कुटीर उद्योग' की रीढ़ के रूप में कार्य किया है।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** **ब्लैक पॉटरी** कोटा की प्रसिद्ध है, जबकि **कागजी (Double Cut) पॉटरी** अलवर की विशेषता है।
- **नोट:** मीनाकारी के आभूषणों में रंग भरने वाले कलाकारों को 'चितेरा' और सोने का काम करने वाले को 'सुनार' कहा जाता है।
- **विरोधाभास:** कुछ स्रोतों में ब्लू पॉटरी का आगमन मानसिंह प्रथम के समय बताया जाता है, परंतु इसे वास्तविक विस्तार और राजकीय संरक्षण **सवाई रामसिंह द्वितीय** के काल में ही प्राप्त हुआ।

6. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Reference)

कला का नाम	प्रमुख केंद्र	प्रमुख कलाकार / प्रणेता	विशेष पहचान
मीनाकारी	जयपुर	कुदरत सिंह	लाहौर से मानसिंह प्रथम द्वारा आगमन।
ब्लू पॉटरी	जयपुर	कृपाल सिंह शेखावत	मिट्टी रहित पॉटरी, रामसिंह II का काल।
टेराकोटा	मोलेला (राजसमंद)	मोहनलाल कुम्हार	गधे के गोबर का प्रयोग, मृणमूर्तियाँ।
कागजी पॉटरी	अलवर	—	अत्यंत पतली और नक्काशीदार।

अध्याय 12: वस्त्र शिल्प: अजरख, सांगानेरी, बगरू प्रिंट और बंधेज कला



मुन्नलाल गोयल, सांगानेरी प्रिंट के प्रसारक। 20वीं सदी। इस कला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।



बगरू प्रिंट का दृश्य (जयपुर)। दाबू तकनीक और वानस्पतिक रंगों का प्रयोग। मटमैले धरातल पर बेल-बूटे।

अजरख प्रिंट (बाड़मेर)। दोनों ओर छपाई और ज्यामितीय आकृतियाँ। खत्री समुदाय का योगदान।



बंधेज कला (लहरिया), जयपुर। टाई एंड डाई तकनीक। श्रावण मास में पहना जाने वाला आड़ी धारियों वाला वस्त्र।

अध्याय 12: वस्त्र शिल्प: अजरख, सांगानेरी, बगरू प्रिंट और बंधेज कला

यह सामग्री डॉ. जयसिंह नीरज, अनुपम मिश्र के शोधों और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के प्रामाणिक वस्त्र-शिल्प दस्तावेजों के आधार पर तैयार की गई है।

1. सांगानेरी प्रिंट (जयपुर): लयात्मक पुष्प विन्यास

सांगानेर (जयपुर) की छपाई अपनी सूक्ष्मता और सफेद पृष्ठभूमि के लिए विश्व विख्यात है।

- **विशेषता:** इसमें लट्टा या मलमल के सफेद कपड़े पर बेल-बूटों की छपाई की जाती है। सांगानेरी प्रिंट के बूटों में प्राकृतिक सजीवता होती है।
- **रंग एवं तकनीक:** इसमें काले और लाल रंगों का प्रचुर प्रयोग होता है। लकड़ी के ठप्पों (Blocks) से की जाने वाली इस छपाई को 'कैलिको प्रिंटिंग' भी कहा जाता है।
- **प्रसारक:** मुन्नालाल गोयल ने इस कला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सांगानेरी प्रिंट को GI टैग प्राप्त है।

2. बगरू प्रिंट (जयपुर): प्राकृतिक रंगों का वैभव

बगरू प्रिंट अपनी 'दाबू' तकनीक और मटमैले (Off-white) रंगों के लिए प्रसिद्ध है।

- **सांगानेरी और बगरू में अंतर:** सांगानेरी प्रिंट में पृष्ठभूमि सफेद होती है और बूटियाँ छोटी होती हैं, जबकि बगरू प्रिंट में पृष्ठभूमि मटमैली या क्रीम रंग की होती है और बेल-बूटे थोड़े बड़े व गहरे होते हैं।
- **दाबू तकनीक (Dabu Technique):** कपड़े के जिस हिस्से पर रंग नहीं चढ़ाना हो, उसे लुगदी, लेई या मिट्टी से दबा दिया जाता है, जिसे 'दाबू' कहते हैं।
- **प्राकृतिक रंग:** यहाँ छपाई के लिए पूरी तरह से वानस्पतिक रंगों (जैसे- हरड़, बहेड़ा, अनार का छिलका, नील और लोहे का बुरादा) का प्रयोग किया जाता है।

3. अजरख और मलीर प्रिंट (बाड़मेर): खत्री समुदाय का योगदान

बाड़मेर की अजरख और मलीर छपाई राजस्थान की सबसे प्राचीन और कठिन वस्त्र कलाओं में से एक है।

- **अजरख प्रिंट (Ajrakh):** इसकी मुख्य विशेषता यह है कि यह कपड़े के **दोनों ओर** (Double sided) छपी होती है।
 - **रंग:** इसमें मुख्य रूप से **नीले और लाल** रंगों का प्रयोग होता है।
 - **आकृतियाँ:** इसमें ज्यामितीय आकृतियाँ (Geometric patterns) अधिक बनाई जाती हैं।
- **मलीर प्रिंट:** इसमें कथई और काले रंगों की प्रधानता होती है।
- **खत्री समुदाय:** बाड़मेर के **खत्री समुदाय** के कलाकार पीढ़ियों से इस कला को संजोए हुए हैं। सिंधी संस्कृति और राजस्थानी लोक कला का यह अद्भुत मिश्रण है।

4. बंधेज कला (Bandhej): टाई एंड डाई तकनीक

कपड़े को धागे से बांधकर रंगने की कला को 'बंधेज' या 'टाई एंड डाई' कहा जाता है।

- **प्रक्रिया:** कपड़े पर नक्काशी के अनुसार उसे बारीक धागे से बांधा जाता है और फिर रंगा जाता है। बंधे हुए हिस्से पर रंग नहीं चढ़ता, जिससे सुंदर डिजाइन उभरते हैं।
- **प्रमुख प्रकार:**
 - **लहरिया (Lehriya):** आड़ी धारियों वाला बंधेज, जो श्रावण मास (तीज) पर विशेष रूप से पहना जाता है। जयपुर का लहरिया प्रसिद्ध है।
 - **मोठड़ा (Mothra):** जब लहरिया की धारियाँ एक-दूसरे को काटती हुई बनाई जाएँ (Cross pattern), तो उसे मोठड़ा कहते हैं। जोधपुर का मोठड़ा प्रसिद्ध है।
 - **पोमचा (Pomcha):** कमल के फूल के अभिप्राय वाला वस्त्र। **पीला पोमचा** पुत्र जन्म पर और **गुलाबी पोमचा** पुत्री जन्म पर जच्चा को भेंट किया जाता है।
 - **चुनरी:** जोधपुर की बंधेज की चुनरी विश्व प्रसिद्ध है।

5. विश्लेषण: राजस्थान का 'ब्लॉक प्रिंटिंग' विज्ञान

राजस्थान के वस्त्र शिल्प में 'ब्लॉक प्रिंटिंग' केवल कला नहीं, बल्कि रसायन शास्त्र (Chemistry) और ज्यामिति (Geometry) का मिश्रण है। सांगानेर के पानी में विशेष खनिज होते हैं जो रंगों में चमक लाते हैं। वहीं बाड़मेर की 'अजरख' कला में कपड़े को कई बार धोना और सुखाना पड़ता है, जो मरुस्थलीय जल प्रबंधन और धैर्य का प्रतीक है। 'खत्री' समुदाय ने अपनी इस तकनीक को गुप्त और पवित्र बनाए रखा, जिससे

इसकी मौलिकता आज भी सुरक्षित है। बंधेज कला का 'लहरिया' राजस्थान की मौसमी संस्कृति (वर्षा ऋतु) का कलात्मक प्रतिनिधित्व करता है।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** आकोला (चित्तौड़गढ़) का 'जाजम' या 'आज़म' प्रिंट प्रसिद्ध है, जिसका उपयोग मांगलिक अवसरों पर बिछाने के लिए किया जाता है।
- **नोट:** तैयब खान (जोधपुर) को बंधेज कला में विशेष कार्य हेतु **पद्मश्री** से सम्मानित किया जा चुका है।
- **शब्दावली:** बंधेज का काम करने वाले को 'चढ़वा' या 'नीलगर' कहा जाता है।

7. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Reference)

वस्त्र कला	प्रमुख केंद्र	मुख्य विशेषता	मुख्य रंग
सांगानेरी प्रिंट	सांगानेर (जयपुर)	सफेद धरातल, बारीक बूटियाँ	लाल और काला
बगरू प्रिंट	बगरू (जयपुर)	मिट्टी का दाबू, बेल-बूटे	प्राकृतिक (वानस्पतिक)
अजरख प्रिंट	बाड़मेर	दोनों तरफ छपाई, ज्यामितीय	नीला और लाल
लहरिया / मोठड़ा	जयपुर / जोधपुर	आड़ी धारियाँ / क्रॉस धारियाँ	चटक रंग
पोमचा	जयपुर	प्रसूता हेतु विशेष वस्त्र	पीला और गुलाबी

wincompete

अध्याय 13: धातु एवं कांच शिल्प: थेवा कला, कोफ्तगिरी और तहंनिशा



1. थेवा कला (Thewa Art): कांच पर सोने की जुगलबंदी

थेवा कला प्रतापगढ़ की विश्व प्रसिद्ध और अत्यंत गोपनीय हस्तकला है। इसमें हरे, नीले या लाल रंग के बेल्जियम कांच पर सोने की अत्यंत बारीक नक्काशी की जाती है।

- **उद्भव एवं इतिहास:** इस कला का जन्म लगभग 400 वर्ष पूर्व प्रतापगढ़ में हुआ। इसके प्रवर्तक **नाथूजी सोनी** माने जाते हैं। तत्कालीन महारावत सामंत सिंह ने इस परिवार को 'राजसोनी' की उपाधि दी थी।
- **विशिष्ट तकनीक:** * इसमें रंगे हुए **बेल्जियम कांच** का प्रयोग आधार के रूप में होता है।
 - 'प्रतापगढ़ी कांच' पर शुद्ध सोने (24 कैरेट) के वर्क को चिपकाकर उस पर बारीक चित्रकारी उकेरी जाती है।
 - **गोपनीयता:** यह कला केवल **राजसोनी परिवार** के पुरुषों तक सीमित है। परंपरा के अनुसार, यह कला घर की बेटियों या बहुओं को भी नहीं सिखाई जाती ताकि इसकी गोपनीयता बनी रहे।
- **पुरस्कार एवं मान्यता:** * इस कला को **G.I. टैग** (Geographical Indication) प्राप्त है।
 - **महेश राजसोनी** और **गिरीश कुमार राजसोनी** को इस कला हेतु **पद्मश्री** से सम्मानित किया जा चुका है।

2. कोफ्तगिरी (Koftgiri): फौलाद पर स्वर्णिम आभा

कोफ्तगिरी फौलाद (Steel/Iron) की बनी वस्तुओं को अलंकृत करने की एक कला है, जिसमें ठंडी धातु पर सोने या चांदी के तारों की जड़ाई की जाती है।

- **मूल और आगमन:** यह मूलतः **फारस (ईरान)** की कला है जो मुगलों के साथ भारत आई। राजस्थान में यह **जयपुर और अलवर** की प्रसिद्ध कला है।
- **प्रक्रिया:** फौलाद की सतह को पहले रेती से खुरदरा किया जाता है और फिर उस पर सोने या चांदी के बारीक तारों से डिजाइन बनाया जाता है। इसे हथौड़े से ठोककर बिठाया जाता है और अंत में हकीक पत्थर से घिसाई की जाती है।
- **सामरिक महत्व:** प्राचीन काल में इस कला का प्रयोग **तलवारों की मूठ**, ढाल और खंजरो को सजाने के लिए किया जाता था। वर्तमान में यह सजावटी वस्तुओं (डिब्बे, फ्रेम) पर की जाती है।

3. तहंनिशा (Tahnnisha): गहरी जड़ाई की कला

तहनिशा कोफ्तगिरी का ही एक परिष्कृत और अधिक श्रमसाध्य रूप है, जो मुख्य रूप से **अलवर** में प्रचलित है।

- **तकनीक:** कोफ्तगिरी में तारों को सतह पर बिठाया जाता है, जबकि तहनिशा में धातु की सतह को गहरा खोदकर (Etching) उसमें सोने या चांदी के तार भरे जाते हैं। इसके बाद सतह को घिसकर समतल कर दिया जाता है, जिससे डिजाइन धातु के भीतर समाहित लगता है।
- **अंतर:** यह कोफ्तगिरी की तुलना में अधिक स्थायी और महंगी कला है।

4. बादला (Badla): मरुस्थल का शीतल पात्र

धातु शिल्प के अंतर्गत जोधपुर का 'बादला' अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी हस्तशिल्प है।

- **केंद्र:** जोधपुर।
- **निर्माण:** यह **जस्ते (Zinc)** से बना पानी का पात्र होता है। जस्ते के पात्र के ऊपर कपड़े या चमड़े की परत चढ़ाई जाती है।
- **विशेषता:** यह एक प्रकार का 'देसी थर्मस' है। जस्ते की रासायनिक क्रिया और ऊपर चढ़े कपड़े के कारण इसमें पानी लंबे समय तक ठंडा रहता है। इसे कलात्मक बनाने के लिए ऊपर कशीदाकारी भी की जाती है।

5. विश्लेषणात्मक विवरण (Analysis Box)

विश्लेषण: धातुकला का सौंदर्य एवं गोपनीयता

राजस्थान के हस्तशिल्प में 'थेवा' और 'कोफ्तगिरी' दो विपरीत ध्रुवों का प्रतिनिधित्व करते हैं। थेवा जहाँ **'कांच'** (अधातु) पर सोने के प्रयोग से कोमलता और श्रृंगार का बोध कराती है, वहीं कोफ्तगिरी **'फौलाद'** (कठोर धातु) पर सोने के प्रयोग से सामरिक वैभव और शक्ति का प्रदर्शन करती है। थेवा कला की 'परिवारगत गोपनीयता' ने इसे एक विशिष्ट 'गिल्ड' (Guild) में बदल दिया है, जो इसकी दुर्लभता और उच्च मूल्य का मुख्य कारण है। ये कलाएं सिद्ध करती हैं कि राजस्थानी शिल्पकार सबसे कठोर और सबसे भंगुर, दोनों ही सतहों पर महारत रखते थे।

6. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** मुरादाबादी काम (पीतल के बर्तनों पर खुदाई और रंगाई) जयपुर का प्रसिद्ध है।
- **नोट:** कुंदन कार्य (सोने के आभूषणों में कीमती रत्न जड़ने की कला) में जयपुर विश्व का सबसे बड़ा केंद्र है।
- **विरोधाभास:** कुछ पर्यटक थेवा को 'मीनाकारी' का रूप मानते हैं, लेकिन तकनीकी रूप से यह भिन्न है क्योंकि इसमें कांच को पिघलाया नहीं जाता, बल्कि उस पर सोने की परत (Frame) लगाई जाती है।

7. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Reference)

कला का नाम	प्रमुख केंद्र	प्रमुख सामग्री	विशेष तथ्य
थेवा कला	प्रतापगढ़	बेल्जियम कांच, सोना	राजसोनी परिवार, अत्यधिक गोपनीय।
कोफ्तगिरी	जयपुर, अलवर	फौलाद, सोने के तार	हथियारों को सजाने की कला।
तहनिशा	अलवर	धातु (गहरी खुदाई)	तारों को धातु के भीतर भरना।
बादला	जोधपुर	जस्ता (Zinc)	पानी को ठंडा रखने वाला पात्र।

अध्याय 14: काष्ठ शिल्प एवं अन्य कलाएं (बस्सी, उस्ता और मथेरणा कला)

अध्याय 14: काष्ठ शिल्प एवं अन्य कलाएं (बस्सी, उस्ता और मथेरणा कला)



हि सामुहिन उस्ता, बीकानेर।
20वीं सदी।
उस्ता कला के सिद्धहस्त कलाकार
और पद्मश्री विजेता।



बस्सी काष्ठ कला का दृश्य
(चित्तौड़गढ़)।
लकड़ी के खिलौने और
कावड़ निर्माण।
प्रभातजी सुथार का योगदान।



कावड़ (बस्सी)।
लकड़ी का चलता-फिरता मंदिर।
धार्मिक कथाओं का चित्रण।



मथेरणा कला (बीकानेर)।
हवेलियों पर धार्मिक भित्ति चित्र।
जैन समुदाय की कला।

यह सामग्री डॉ. जयसिंह नीरज, डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के 'राजस्थान के शिल्पकार' नामक प्रामाणिक दस्तावेजों पर आधारित है।

1. बस्सी की काष्ठ कला (चित्तौड़गढ़): लकड़ी में बसते देव

चित्तौड़गढ़ जिले का बस्सी गाँव राजस्थान में काष्ठ शिल्प (Woodcraft) का सबसे बड़ा केंद्र है। यह कला लगभग 400 वर्ष पुरानी है।

- **उद्भव एवं प्रवर्तक:** इस शिल्प का जन्म मेवाड़ महाराणा जगत सिंह प्रथम के काल में हुआ माना जाता है। इसके आदि पुरुष प्रभातजी सुथार थे। यहाँ का सुथार समुदाय पीढ़ियों से इस विलक्षण कला को जीवित रखे हुए है।
- **बेवाण (Bevan):**
 - यह लकड़ी से बना एक छोटा मंदिरनुमा ढांचा होता है, जिसे 'चलत देव विमान' (Mobile Temple) भी कहा जाता है।
 - इसका प्रयोग मुख्य रूप से जलझूलनी एकादशी के अवसर पर ठाकुर जी को जलाशय तक ले जाने के लिए किया जाता है। इसे 'मिनीऐचर टेंपल' भी कहते हैं।
- **कावड़ (Kavad):**
 - यह लकड़ी से बना एक मंदिरनुमा चित्रमय ढांचा होता है, जिसमें कई कपाट (द्वार) होते हैं।
 - **विशेषता:** कावड़ को 'चलता-फिरता तीर्थ' कहा जाता है। कावड़िया भाट इन कपाटों को एक-एक कर खोलते हुए पौराणिक कथाएं (रामायण, महाभारत) सुनाते हैं। इसे 'भ्रामक मंदिर' भी कहा जाता है क्योंकि इसमें कथा के साथ दृश्य बदलते हैं।
- **अन्य उत्पाद:** गणगौर की मूर्तियाँ, बाजोट (चौकी), तोरण और चोपड़ा (कुमकुम-अक्षत रखने का पात्र)।

2. उस्ता कला (Usta Art): बीकानेर की स्वर्णिम मुनवत

बीकानेर की उस्ता कला विश्व की सबसे अनूठी कलाओं में से एक है, जिसमें ऊँट की खाल पर सोने की सूक्ष्म नक्काशी की जाती है। इसे 'मुनवत कला' भी कहते हैं।

- **आगमन:** यह मूलतः ईरान की कला है, जिसे मुगल सम्राटों के माध्यम से लाहौर और फिर बीकानेर लाया गया। महाराजा अनूप सिंह के काल में उस्ता कलाकारों को विशेष संरक्षण मिला।

- **प्रक्रिया:** ऊँट की खाल को साफ कर उस पर सोने के वर्क (Gold Foil) और रंगों से सुंदर बेल-बूटे उकेरे जाते हैं। इसे ऊँट की कूपियों (बोतलों), दीवारों और छतों (जैसे- जूनागढ़ के अनूप महल) पर देखा जा सकता है।
- **हि सामुदायिक उस्ता:** बीकानेर के इस महान कलाकार को उस्ता कला में उनके असाधारण योगदान के लिए 1986 में **पद्मश्री** से सम्मानित किया गया था।
- **प्रशिक्षण:** बीकानेर में 'कैमल हाइड ट्रेनिंग सेंटर' (Camel Hide Training Centre) इस कला को संरक्षित करने का कार्य कर रहा है।

3. मथेरणा कला (Matherana Art): बीकानेर की धार्मिक चित्रकला

यह बीकानेर की एक अन्य विशिष्ट कला है, जो मुख्य रूप से जैन समुदाय के 'मथेरणा' कलाकारों द्वारा विकसित की गई।

- **विशेषता:** इसमें पौराणिक कथाओं और हिंदू देवी-देवताओं का भित्ति चित्रण (Fresco) किया जाता है।
- **आला-गीला पद्धति:** मथेरणा कलाकार गीली दीवार पर चित्र बनाने में कुशल होते हैं, जिसे 'फ्रेस्को बुनो' या स्थानीय भाषा में 'पणो' कहा जाता है।
- **उद्देश्य:** ये कलाकार राजाओं के आदमकद चित्र बनाने और मंदिरों में धार्मिक कथाएं उकेरने के लिए प्रसिद्ध रहे हैं।

4. चंद्रजी का गढ़ और बोडीगामा (तीर-कमान शिल्प)

राजस्थान के दक्षिण में बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिलों में तीर-कमान बनाने का प्राचीन हस्तशिल्प आज भी जीवित है।

- **केंद्र:** बांसवाड़ा का **चंद्रजी का गढ़** और डूंगरपुर का **बोडीगामा गाँव**।
- **विशेषता:** यहाँ के तीर-कमान आदिवासी संस्कृति का अभिन्न अंग हैं और सामरिक महत्व के साथ-साथ वर्तमान में सजावटी वस्तुओं के रूप में भी प्रसिद्ध हैं।

5. विश्लेषण: काष्ठ और चर्म शिल्प का दार्शनिक पक्ष

राजस्थान के हस्तशिल्प में 'बस्सी की कावड़' और 'बीकानेर की उस्ता कला' दो अलग-अलग सांस्कृतिक धाराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। कावड़ जहाँ **'शिक्षा और मौखिक परंपरा'** का माध्यम है, जो शिक्षा को गांव-गांव तक पहुँचाने का एक प्राचीन दृश्य-श्रव्य (Audio-Visual) उपकरण था; वहीं उस्ता कला **'राजसी वैभव और सूक्ष्मता'** की पराकाष्ठा है। बस्सी की काष्ठ कला ने 'देवत्व' को सुलभ बनाया, जबकि उस्ता कला ने 'रेगिस्तान के जहाज' (ऊँट) को एक कलात्मक कैनवास में बदल दिया। ये कलाएं राजस्थान की विपरीत परिस्थितियों में भी सृजन की निरंतरता को दर्शाती हैं।

6. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** बस्सी की काष्ठ कला में **'खैरादी'** और **'सुथार'** जाति के लोग सिद्धहस्त होते हैं।
- **नोट: काठ का रैन बसेरा** (झालावाड़) लकड़ी के महल का एक उत्कृष्ट उदाहरण था, जिसे देहरादून के शोध संस्थान ने बनाया था।
- **विरोधाभास:** कुछ स्रोतों में उस्ता कला का नाम 'उस्ता' केवल कलाकारों की जाति के कारण बताया जाता है, लेकिन तकनीकी रूप से इसे **'मुनवत'** कहना अधिक सटीक है, जिसका अर्थ सोने की नक्काशी होता है।

7. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Reference)

कला / शिल्प	प्रमुख केंद्र	प्रमुख कलाकार	विशेष विवरण
काष्ठ शिल्प (बेवाण, कावड़)	बस्सी (चित्तौड़गढ़)	प्रभातजी सुथार	चलता-फिरता मंदिर, पौराणिक कथाएं।

उस्ता कला (मुनव्वत)

बीकानेर

हि सामुद्दीन उस्ता

ऊँट की खाल पर सोने की नक्काशी।

मथेरणा कला

बीकानेर

मुन्नालाल, मुकुंद

जैन धार्मिक भित्ति चित्र, आला-गीला।

तीर-कमान

चंदूजी का गढ़ा (बांसवाड़ा)

—

आदिवासी सामरिक शिल्प।

काष्ठ नक्काशी (फर्नीचर)

जेठाना (झुंगरपुर)

—

सागवान की लकड़ी पर कार्य।



wincompete

अध्याय 15: अन्य महत्वपूर्ण हस्तशिल्प (छपाई, दरियाँ, गोटा-पत्ती एवं कागज)

1. विशिष्ट छपाई शैलियाँ: आकोला और पीपाड़

अध्याय 12 में हमने सांगानेरी और अजरख प्रिंट का अध्ययन किया था। इनके अतिरिक्त भी राजस्थान में कुछ विशिष्ट क्षेत्रीय छपाई शैलियाँ प्रचलित हैं:

- **जाजम और आजम प्रिंट (आकोला, चित्तौड़गढ़): * जाजम प्रिंट:** इसका उपयोग मुख्य रूप से मांगलिक अवसरों पर बिछाने के मोटे कपड़ों (जाजम) पर किया जाता है। इसमें लाल और काले रंगों की प्रधानता होती है।
 - **आजम प्रिंट:** यह ओढ़नियों के लिए प्रसिद्ध है। इसमें बारीक डिजाइन और गाढ़े रंगों का प्रयोग होता है।
- **दाबू प्रिंट:** आकोला 'दाबू' (Resist Printing) के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ कपड़े के जिस भाग को रंगना नहीं होता, वहाँ मिट्टी या लुगदी का लेप लगाया जाता है।

2. दरी शिल्प (Carpet/Durrie Craft): धागों का ताना-बाना

राजस्थान की हाथ से बनी दरियाँ अपनी मजबूती और आकर्षक ज्यामितीय डिजाइनों के लिए जानी जाती हैं।

- **सालावास (जोधपुर):** यह दरियों का सबसे बड़ा केंद्र है। यहाँ सूती और ऊनी दरियाँ बनाई जाती हैं। सालावास की दरियों को **G.I. टैग** प्राप्त है।
- **टांकला (नागौर):** यहाँ की दरियाँ अपनी विशिष्ट बुनावट और कलात्मकता के लिए प्रसिद्ध हैं।
- **लवाण (दौसा):** यहाँ की 'दरी' हस्तशिल्प अपनी पारंपरिक शैली को बनाए हुए है।
- **नमदे (टोंक):** ऊन को कूट-कूटकर जमाकर बनाई गई बिछावट को 'नमदा' कहते हैं। राजस्थान में केवल टोंक ही नमदों का मुख्य केंद्र है।

3. गोटा-पत्ती कार्य: वस्त्रों की स्वर्णिम चमक

गोटा सूती ताने और चांदी के सुनहरे तारों के बाने से बना एक रिबननुमा फीता होता है, जिसे वस्त्रों पर टांका जाता है।

- **प्रमुख केंद्र:** खंडेला (सीकर) और जयपुर। खंडेला गोटा उद्योग का सबसे प्राचीन और प्रसिद्ध केंद्र है।
- **गोटा के प्रकार (RPSC के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण):**
 - **लप्पा-लप्पी:** चौड़े गोटे को 'लप्पा' और कम चौड़ाई वाले गोटे को 'लप्पी' कहते हैं।
 - **किरण:** यह गोटे की एक पतली किनार होती है।
 - **बांकड़ी:** गोटे को मोड़कर बनाई गई डिजाइन।
 - **गोखरू और बीजीया:** गोटे के अन्य विविध प्रकार।

4. हस्तनिर्मित कागज (Handmade Paper): सांगानेर का वैभव

राजस्थान में कागज निर्माण की कला बहुत पुरानी है, जिसे सवाई जयसिंह के काल में विशेष प्रोत्साहन मिला।

- **प्रमुख केंद्र:** सांगानेर (जयपुर)। यहाँ कागज निर्माण के लिए लुगदी, पुराने सूती कपड़ों और फूलों का प्रयोग किया जाता है।
- **विशेषता:** यहाँ का कागज पर्यावरण के अनुकूल और रासायनिक मुक्त होता है। सांगानेर में स्थित '**कुमारप्पा राष्ट्रीय हस्तशिल्प संस्थान**' इस कला के विकास हेतु कार्यरत है।
- **गोसुण्डा (चित्तौड़गढ़):** यहाँ भी पारंपरिक रूप से हस्तनिर्मित कागज बनाया जाता है।

5. चर्म शिल्प (Leather Craft): मरुस्थलीय पादत्राण

- **मोजरियाँ (Mojaris):** राजस्थान में जूतों को मोजरी कहा जाता है।
 - **भीनमाल (जालौर):** यहाँ की 'कशीदाकारी युक्त मोजरियाँ' सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं।
 - **जोधपुर और जयपुर:** यहाँ भी कलात्मक मोजरियाँ बनाई जाती हैं।
- **काशिदाकारी (Kashidakari):** चमड़े पर सोने-चांदी के तारों से की जाने वाली नक्काशी, जिसे मुख्य रूप से बीकानेर और जैसलमेर में देखा जा सकता है।

6. विश्लेषण: हस्तशिल्प और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सुदृढीकरण

राजस्थान के ये हस्तशिल्प केवल कलात्मक वस्तुएं नहीं हैं, बल्कि ये राज्य के 'MSME' क्षेत्र की आधारशिला हैं। सालावास की दरियाँ और खंडेला का गोटा उद्योग ग्रामीण समुदायों को प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करते हैं। गोटा-पत्ती के 'लप्पा-लप्पी' जैसे शब्द राजस्थानी भाषा की समृद्ध शिल्प-शब्दावली को दर्शाते हैं। हस्तनिर्मित कागज का सांगानेर से निर्यात होना यह सिद्ध करता है कि पारंपरिक ज्ञान को यदि आधुनिक तकनीक का साथ मिले, तो यह वैश्विक बाजार में अपनी धाक जमा सकता है।

7. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** खेसला (ओढ़ने का मोटा कपड़ा) **लेटा गाँव (जालौर)** का प्रसिद्ध है।
- **नोट:** पाव रजाई (250 ग्राम रुई वाली अत्यंत हल्की रजाई) जयपुर की विशिष्टता है।
- **विरोधाभास:** कुछ पुस्तकों में गोटा उद्योग का मुख्य केंद्र केवल जयपुर दिया गया है, लेकिन ऐतिहासिक और गुणवत्ता की दृष्टि से **खंडेला (सीकर)** सर्वोपरि है।

8. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Reference)

शिल्प	प्रमुख केंद्र	विशिष्ट शब्दावली
दरी / कालीन	सालावास, टांकला	ताना-बाना, G.I. टैग
गोटा-पत्ती	खंडेला, जयपुर	लप्पा-लप्पी, किरण, बांकड़ी
नमदे	टोंक	ऊनी कुटाई शिल्प
मोजरियाँ	भीनमाल, जोधपुर	कशीदाकारी पादत्राण
कागज शिल्प	सांगानेर, गोसुण्डा	कुमारप्पा संस्थान

wincompete



बिंदु 4: राजस्थानी वेशभूषा और आभूषण

अध्याय 16: पुरुषों और महिलाओं की पारंपरिक वेशभूषा

यह सामग्री डॉ. गोपीनाथ शर्मा, हुकुम चंद जैन और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के 'राजस्थानी संस्कृति के प्रतिमान' के प्रामाणिक तथ्यों पर आधारित है।

1. पुरुषों की वेशभूषा: मान-मर्यादा का प्रतीक

राजस्थान में पुरुषों की वेशभूषा उनकी वीरता और सामाजिक स्थिति का दर्पण रही है।

A. सिर की वेशभूषा (पगड़ी और साफा):

राजस्थान में पगड़ी सम्मान का सर्वोच्च प्रतीक है।

- **पगड़ी (Pagri):** मेवाड़ में पगड़ी बांधने वाले व्यक्ति को 'छाबदार' कहा जाता था। प्रमुख शैलियों में **उदयशाही, अमरशाही, अरसीशाही और विजयशाही** प्रसिद्ध हैं।
- **साफा (Safa):** जोधपुर का साफा (मोठड़े का साफा) विश्व प्रसिद्ध है।
- **विशिष्ट अवसर:**
 - **केसरिया पगड़ी:** युद्ध पर जाते समय (केसरिया करना)।
 - **फूल-पत्ती की पगड़ी:** होली के अवसर पर।
 - **लहरिया की पगड़ी:** श्रावण मास में।
 - **मदील (Madil):** दशहरे के अवसर पर पहनी जाने वाली विशेष पगड़ी।

B. ऊपरी शरीर की वेशभूषा:

- **अंगरखी (Angarkhi):** इसे 'बुगतरी' भी कहा जाता है। यह बिना कॉलर और बिना बटनों का वस्त्र है जिसे धागों से बांधा जाता है।

- **अन्य नाम:** तनसुख, दुतई, गाबा, गदर, मिर्जाई और डोढी।
- **पछेवड़ा (Pachevda):** सर्दियों में ओढ़ा जाने वाला सूती चादर जैसा मोटा वस्त्र।
- **कमरबंद (Patka):** अंगरखी के ऊपर कमर पर बांधा जाने वाला कपड़ा, जिसमें अक्सर तलवार या खंजर खोसा जाता था।

C. निचले शरीर की वेशभूषा:

- **धोती:** ग्रामीण पुरुषों का मुख्य पहनावा।
- **बृजेस (Brijes):** चूड़ीदार पायजामे के समान, जो घुटनों के ऊपर से ढीला और नीचे से तंग होता है। यह मुख्य रूप से शिकार या सवारी के समय पहना जाता था।

2. महिलाओं की वेशभूषा: रंगों का उत्सव

राजस्थानी महिलाओं की वेशभूषा चटक रंगों और विशिष्ट बनावट के लिए जानी जाती है।

A. कुर्ती और कांचली (Kurti-Kanchli):

- **कांचली:** यह शरीर के ऊपरी हिस्से में पहना जाने वाला बांहदार वस्त्र है।
- **कुर्ती:** यह कांचली के ऊपर पहनी जाने वाली बिना बांह की लंबी चोली होती है। राजस्थान में 'कुर्ती-कांचली' का जोड़ा पारंपरिक पहनावे का आधार है।

B. घाघरा (Ghagra):

- यह कमर से नीचे पहना जाने वाला घेरदार वस्त्र है। इसे 'लहंगा' भी कहा जाता है।
- **कलीदार घाघरा:** राजस्थान में **80 कली** और **100 कली** के घाघरे प्रसिद्ध रहे हैं।
- **धाबला (Dhabla):** ऊन से बना घाघरा, जो मुख्य रूप से ग्रामीण और विशिष्ट समाज की महिलाओं द्वारा पहना जाता है।

C. ओढ़नी (Odhni):

ओढ़नी महिला के सुहाग और गरिमा का प्रतीक है। इसके विविध प्रकार परीक्षाओं में अक्सर पूछे जाते हैं:

- **पोमचा (Pomcha):** कमल के फूल के अभिप्राय वाली ओढ़नी।
 - **पीला पोमचा:** पुत्र जन्म पर (जच्चा द्वारा)।
 - **गुलाबी पोमचा:** पुत्री जन्म पर।
 - **चीड़ का पोमचा (काला पोमचा):** हाड़ौती क्षेत्र में विधवा महिलाओं द्वारा ओढ़ा जाता है।
- **लहरिया:** श्रावण में तीज के अवसर पर। जयपुर का 'राजशाही लहरिया' प्रसिद्ध है।
- **ताराभांत की ओढ़नी:** आदिवासी महिलाओं में अत्यंत लोकप्रिय। इसके अलावा **ज्वारभांत** और **लहरभांत** की ओढ़नी भी प्रसिद्ध है।

3. जनजातीय वेशभूषा: विशिष्ट पहचान

- **ढेपाड़ा (Dhepada):** भील पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली तंग धोती।
- **खोयतू (Khoytu):** भील पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली लंगोटी।
- **पीरिया (Piria):** भील महिलाओं द्वारा विवाह के अवसर पर पहनी जाने वाली पीले रंग की ओढ़नी।
- **कछावू (Kachhavu):** भील महिलाओं द्वारा घुटनों तक पहना जाने वाला घाघरा।
- **फालू (Phalu):** भील पुरुषों द्वारा सिर पर बांधा जाने वाला गमछा।

4. विश्लेषण: वेशभूषा का सामाजिक-भौगोलिक तर्क

राजस्थान की वेशभूषा में 'पगड़ी' का आकार और उसकी बनावट क्षेत्र विशेष की जलवायु को दर्शाती है। मरुस्थलीय क्षेत्रों में बड़ी पगड़ियाँ सिर को लू और धूप से बचाने का कार्य करती थीं। महिलाओं के 'कुर्ती-कांचली' का दो-स्तरीय ढांचा सुरक्षा और शालीनता का प्रतीक है। ओढ़नी के रंगों (जैसे- पीला पोमचा) का सीधा संबंध 'मातृत्व' और 'उत्सव' से है। आधुनिक समय में 'बृजेस' और 'लहरिया' जैसे वस्त्रों ने अंतरराष्ट्रीय फैशन जगत में स्थान बनाया है, जो राजस्थानी लोक कला की जीवंतता का प्रमाण है।

5. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य: नांदणा (Nandna)** राजस्थान का प्राचीनतम वस्त्र है, जिसका प्रयोग आदिवासी महिलाओं द्वारा किया जाता है। यह नीले रंग के छपे हुए कपड़े से बना होता है।
- **नोट: सूथणी (Suthani)** एक विशेष प्रकार का पायजामा है, जो बच्चों द्वारा पहना जाता है।
- **विरोधाभास:** कुछ स्रोतों में 'बृजेस' को केवल शहरी पहनावा बताया जाता है, लेकिन ऐतिहासिक रूप से यह राजपूत सामंतों का शिकार हेतु बनाया गया एक विशिष्ट 'इंडो-वेस्टर्न' वस्त्र था।

6. वेशभूषा: त्वरित संदर्भ तालिका (अध्याय 16)

वस्त्र का नाम	वर्ग	विशिष्ट विवरण
अंगरखी / बुगतरी	पुरुष	शरीर के ऊपरी भाग का वस्त्र।
बृजेस	पुरुष	पायजामे का राजसी रूप।
मदील	पुरुष	दशहरे की पगड़ी।
कछावू	महिला	भील महिलाओं का घाघरा।
पीरिया	महिला	भील वधू की ओढ़नी।
चीड़ का पोमचा	महिला	हाड़ौती क्षेत्र, काला रंग (विधवा)।
कटकी	महिला	अविवाहित आदिवासी युवतियों की ओढ़नी।

wincompete

अध्याय 17: राजस्थानी आभूषण: सिर से पैर तक का विस्तृत विवरण

1. सिर एवं मस्तक के आभूषण

सिर के आभूषण स्त्री के सुहाग और गरिमा का प्रतीक माने जाते हैं।

- **बोरला (Borla):** ललाट के बीच पहना जाने वाला लट्टू के समान आभूषण।
- **शीशफूल (Sheeshphool):** सिर के पीछे बालों में गूँथा जाने वाला आभूषण।
- **मेमंद (Memand):** यह आरपीएससी का सबसे पसंदीदा प्रश्न है; यह सिर पर पहना जाने वाला कलात्मक आभूषण है।
- **रखड़ी (Rakdi):** बोरले के पीछे की ओर पहनी जाने वाली भारी गोल आकृति।
- **अन्य:** टीकड़ा, सांकली, तावित, फिणी (मस्तक)।

2. कान के आभूषण

कानों की सजावट के लिए राजस्थान में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में दर्जनों प्रकार के आभूषण प्रचलित हैं।

- **ओगनिया (Oganiya):** कान के ऊपरी हिस्से में पहना जाने वाला पत्तीनुमा आभूषण (अक्सर परीक्षाओं में पूछा जाता है)।
- **सुरलिया (Surliya):** कान के छेद में पहना जाने वाला आभूषण।
- **झुमका/झुमर:** लटकन वाले आभूषण।
- **टोटी (Totty):** कान का गोल उभरा हुआ आभूषण।
- **अन्य:** कर्णफूल, पीपलपत्रा, अंगोट्या, जेला, लटकन, मोर-फँवर।

3. नाक के आभूषण

- **नथ (Nath):** नाक के बाएं छिद्र में पहनी जाने वाली स्वर्ण जड़ित बाली।
- **चोंप (Chomp):** इसे 'चूँप' से भ्रमित न करें। चोंप **नाक** का आभूषण है।
- **बारी (Baari):** नाक में पहनी जाने वाली छोटी बाली।
- **भँवरकड़ी:** नाक का एक विशिष्ट आभूषण।
- **अन्य:** लोंग, कांटा, फिणी, बेसर (किशनगढ़ शैली की विशिष्टता)।

4. दाँत के आभूषण

- **चूँप (Choop):** दाँत में सोने की मेख या कील जड़वाना। (याद रखें: चोंप-नाक, चूँप-दाँत)।
- **रखन (Rakhn):** दाँतों पर सोने या चांदी की परत चढ़वाना।
- **धांस एवं चूप:** दाँत के अन्य सहायक नाम।

5. गले एवं छाती के आभूषण

यहाँ राजस्थान के सबसे भारी और कलात्मक आभूषण मिलते हैं।

- **तिमणिया (Timaniya):** गले का भारी आभूषण।
- **आड़ (Aad):** राजस्थान की 'जोधाणे' या मारवाड़ शैली की प्रसिद्ध कंठी।
- **मादलिया (Maandalya):** आदिवासियों एवं ग्रामीणों द्वारा गले में धारण किया जाने वाला ताबीज जैसा आभूषण।
- **चंपाकली:** चम्पा की कलियों के आकार वाला हार।
- **थम्मन्यो:** गले का एक प्राचीन आभूषण।
- **अन्य:** हंसली, हमेल (आदिवासी हार), कंठी, गुलिबंद, झालरो, चन्द्रहार, पंचलड़ी, तुलसी।

6. हाथ (बाँध, कलाई एवं उंगलियाँ) के आभूषण

- **गजेरा (Gajra):** कलाई का आभूषण (इसे फूलों वाला गजरा न समझें)।
- **बगड़ी (Bangdi):** सोने या चूड़ियों के ऊपर पहनी जाने वाली मोटी चूड़ी।

- **गोखरू (Gokru):** कलाई का दानेदार आभूषण।
- **नोगरी:** कलाई का एक विशिष्ट आभूषण।
- **पुँछी (Poonchi):** कलाई का आभूषण।
- **उंगलियाँ:** बींठी, दामणा (दो उंगलियों में एक साथ पहनी जाने वाली अंगूठी), अरसी (अंगूठे की अंगूठी, जिसमें शीशा लगा होता है)।

7. कमर के आभूषण

- **कंदोरा/करधनी:** कमर पर बांधी जाने वाली जंजीर।
- **तगड़ी (Tagdi):** कमर का आभूषण।
- **कणकती:** कमर की पतली जंजीर।
- **सटका:** कमर का लटकाया जाने वाला आभूषण (चाबियाँ लटकाने हेतु)।

8. पैर एवं अंगुलियों के आभूषण

- **पाजेब (Pajeb):** पैरों की झंकार वाली जंजीर।
- **नेवरी (Nevri):** टखने के पास पहना जाने वाला आभूषण (RPSC हेतु महत्वपूर्ण)।
- **आंवला:** पैर का कड़ा।
- **झाँझर:** बजने वाली पायल।
- **बिछिया:** पैर की अंगुलियों का मुख्य आभूषण।
- **अन्य:** फोलरी, गौर, पगपान, तोडियो, लच्छे।

9. विश्लेषण: आभूषण और स्वास्थ्य विज्ञान

राजस्थान के अधिकांश आभूषणों के पीछे वैज्ञानिक तर्क भी निहित है। 'एक्युप्रेसर' के सिद्धांतों के अनुसार, कानों और नाक के छेदन से विशिष्ट नसों पर दबाव पड़ता है जो स्वास्थ्य हेतु लाभदायक माना जाता है। कमर में 'करधनी' और पैरों में 'पाजेब' (चांदी) का प्रयोग शरीर की ऊर्जा को नियंत्रित करने और शीतलता प्रदान करने हेतु किया जाता है। आभूषण केवल प्रदर्शन की वस्तु नहीं, बल्कि राजस्थान की 'पहचान' और 'मर्यादा' का अभिन्न हिस्सा हैं।

10. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** दामणा दो उंगलियों में एक साथ पहनी जाने वाली अंगूठी है, जबकि **आंवला** पैर का आभूषण है।
- **नोट:** तेधड़ पैर का आभूषण है, जिसे अक्सर गले के आभूषणों से भ्रमित किया जाता है।
- **विशेष:** बेसर आभूषण का सबसे सुंदर चित्रण किशनगढ़ शैली की 'बणी-ठणी' पेंटिंग में मिलता है।
- **भ्रम निवारण:** चोंप (नाक) vs चूँप (दाँत)।

11. आभूषण: त्वरित संदर्भ तालिका (अध्याय 17)

अंग

प्रमुख आभूषण

सिर

बोरला, मेमंद, रखड़ी, शीशफूल, सांकली।

कान

ओगनिया, सुरलिया, पीपलपत्रा, टोटी, लटकन।

नाक

नथ, चोंप, वारी, कांटा, फिणी।

wincompete

गला

तिमणिया, चम्पाकली, मादलिया, हंसली, हमेल।

कमर

कंदोरा, करधनी, तगड़ी, कणकती।

पैर

नेवरी, आंवला, पाजेब, बिछिया, तेधड़।

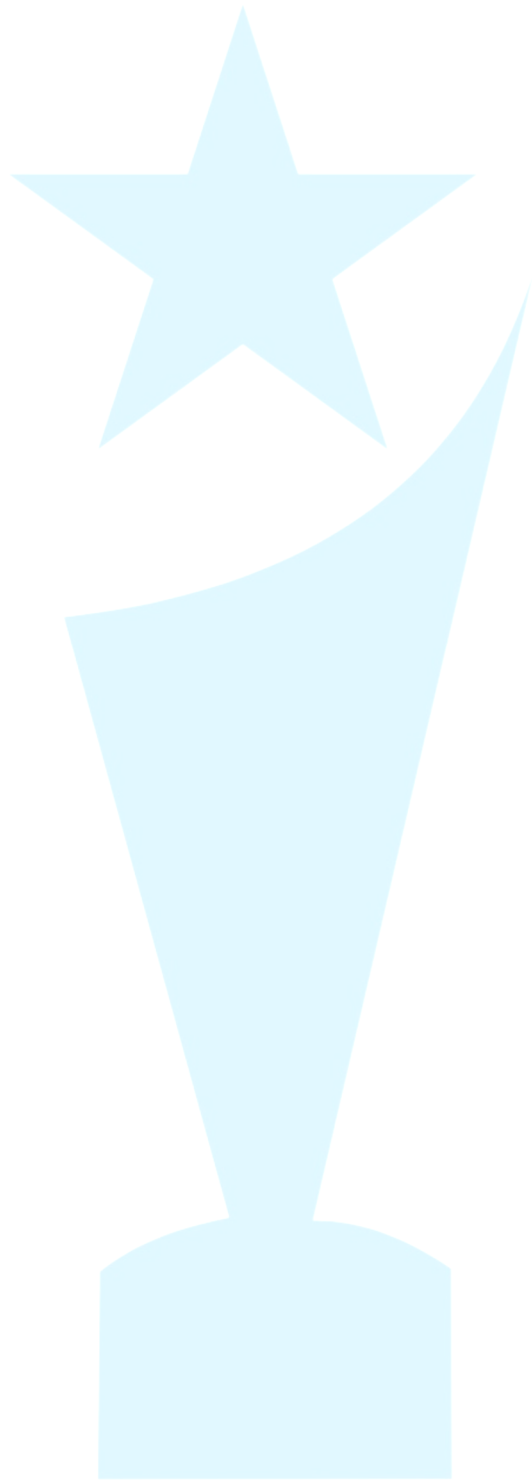
हाथ

गोखरू, बगड़ी, नोगरी, पुँछी, दामणा।



संदर्भ सूची:

1. राजस्थानी वेशभूषा एवं आभूषण - राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
2. आधुनिक राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास - डॉ. गोपीनाथ शर्मा।
3. RPSC RAS Pre/PSI PYQ
4. राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा - डॉ. जयसिंह नीरज।
5. राजस्थान के हस्तशिल्प - डॉ. जयसिंह नीरज।
6. राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा - हुकुम चंद जैन।
7. राजस्थान के आधुनिक चित्रकार - डॉ. जयसिंह नीरज (राज. हिंदी ग्रंथ अकादमी)।
8. राजस्थान की रजत बूंदें - अनुपम मिश्र।



wincompete